

हरिभूमि महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार 23 अगस्त 2026

इंटीग्रेटेड मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब बनने के बाद पहली बार पटरी पर दौड़ेगी मालगाड़ी

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी 23 अगस्त सुबह 9:30 बजे नांगल चौधरी क्षेत्र में नवनर्मित इंटीग्रेटेड मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब में पहली मालगाड़ी को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे और रेल कनेक्टिविटी का विधिवत शुभारंभ करेंगे। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत रेल यार्ड और ट्रैक का निर्माण पूरा होने के बाद यहां पहली बार मालगाड़ी का आगमन हो रहा है, जो क्षेत्र के औद्योगिक विकास में एक मील का पथर साबित होगा। इस कार्यक्रम में हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह भी उपस्थित रहेंगे।

इस राज्यस्तरीय कार्यक्रम का आयोजन

■ **डीसी अनुपमा अंजली ने लिया कार्यक्रम स्थल का जायजा**

हरियाणा सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, हरियाणा राज्य औद्योगिक एवं अवसंरचना विकास निगम तथा रेल मंत्रालय के उपक्रम डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की ओर से संयुक्त रूप से किया जाएगा। मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर उपायुक्त अनुपमा अंजली ने प्रशासनिक अधिकारियों के साथ कार्यक्रम स्थल और तलोट, घाटाशेर तथा बसीरपुर क्षेत्र में बने आधुनिक रेलवे स्टेशन भवनों का दौरा किया। उन्होंने आयोजन स्थल पर सुरक्षा, मंच, बैठक व्यवस्था, यातायात प्रबंधन और तकनीकी तैयारियों का बारीकी से निरीक्षण करते हुए सभी प्रबंध समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। डीसी ने बताया कि इस केंद्र के पहले चरण

के तहत 408 एकड़ क्षेत्र में रेल, सड़क, बिजली और जल आपूर्ति जैसी सभी जरूरी सुविधाएं तैयार कर ली गई हैं।

यहां मालगाड़ियों के सुगम संचालन के लिए लगभग दो किलोमीटर लंबी चार रेल पटरियां, दोहरे स्टेशन भवन और विशाल प्लेटफॉर्म बनाए गए हैं। वेस्टर्न डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर से सीधा जुड़ने के कारण यह केंद्र उत्तर भारत के प्रमुख बाजारों और बंदरगाहों तक माल की तेज तथा सस्ती दुलाई सुनिश्चित करेगा, जिससे बड़े उद्योगों का आगमन होगा और स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक दीपक, एसडीएम अनिरुद्ध यादव, सीटीएम डॉ. मंगल सेन के अलावा अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।



नारनौल। कार्यक्रम स्थल का जायजा लेती डीसी अनुपमा अंजली।

फोटो: हरिभूमि

इंटीग्रेटेड मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब के पांच किलोमीटर दायरे में ड्रोन उड़ाने पर रोक

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के 23 अगस्त को इंटीग्रेटेड मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब दौरे को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए हैं। जिलाधीश अनुपमा अंजली ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इंटीग्रेटेड मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब की सीमा के पांच किलोमीटर के दायरे में किसी भी प्रकार के मानव रहित हवाई वाहन या ड्रोन उड़ाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। इसके साथ ही ड्रोन रूल्स 2021 के तहत 23 अगस्त को इस क्षेत्र को अस्थायी रेड जोन घोषित किया गया है। यह आदेश पुलिस, सेना, भारतीय वायु सेना या हरियाणा सूचना, लोक संपर्क एवं भाषा विभाग की ओर से अपनी आधिकारिक ड्यूटी के दौरान उपयोग किए जाने वाले ड्रोन पर लागू नहीं होगा। यदि कोई भी व्यक्ति इस आदेश का उल्लंघन करता है, तो उसके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के तहत सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

आरोपित को न्यायिक हिरासत में भेजा

कनीना। पुलिस की ओर से हाल ही में एक मुठभेड़ के बाद काबू किए गए आरोपित को एसडीजेएम कोर्ट में पेश किया गया। जहां कोर्ट ने उसे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। सदर थाना ईचांज खिंद सिंह ने बताया कि दौंगड़ा पुलिस चौकी अंतर्गत भालखी की ढाणी के पास मध्य रात्रि आरोपित सोमबीर वासी बागोत ने पुलिस टीम पर फायर कर दिए थे। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में उसके पैर में गोली लगी थी, जिससे वह घायल हो गया था। अदालत ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद पुलिस को जवाब दखिल करने का निर्देश दिया और आरोपित सोमबीर को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश जारी कर दिया।

आज खुला रहेगा प्रधान डाकघर

नारनौल। राखी की विशेष बुकिंग हेतु 23 अगस्त को प्रधान डाकघर खुला रहेगा। इस बारे में पोस्टमस्टर ने बताया कि रक्षाबंधन के अवसर पर राखी की विशेष बुकिंग की सुविधा प्रदान करने के लिए 23 अगस्त रविवार को भी प्रधान डाकघर खुला रहेगा। इस अवसर पर आम जनता राखी की बुकिंग एवं संबंधित डाक सेवाओं का लाभ उठा सकती है।

28 को जेट्टू बाबा मंदिर में श्रावणी उपाकर्न कार्यक्रम

नारनौल। श्री गौड़ ब्राह्मण सभा एवं श्री नूनीवाल ब्राह्मण समाज के संयुक्त तत्वावधान में श्रावणी उपाकर्म कार्यक्रम का आयोजन 28 अगस्त को जेट्टू बाबा मंदिर प्रांगण, नसीबपुर में किया जाएगा। इस संबंध में गौड़ ब्राह्मण सभा के प्रधान राकेश महरा एडवोकेट ने बताया कि कार्यक्रम के तहत प्रातः सात बजे देव, ऋषि एवं पितृ तर्पण, 8-15 बजे सप्तऋषि पूजन, नौ बजे आरती तथा 9-15 बजे प्रसाद वितरण किया जाएगा। उन्होंने विप्र बंधुओं से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में शामिल होकर धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने की अपील की।

गिरफ्तार युवाओं को तुरंत रिहा कर एफआईआर वापस ले सरकार, परिवारों को परेशान करना बंद करे

शांतिपूर्ण विरोध करने वाले कांग्रेसियों पर एफआईआर व गिरफ्तारियां लोकतांत्रिक अधिकारों का दमन: राव नरेंद्र सिंह

हरिभूमि न्यूज़ ►► मंडी अटेली

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने शनिवार को कांग्रेस के अटेली ब्लॉक प्रधान सुमेर सिंह बिहाली के ऑफिस में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर प्रदेश सरकार का सरकार घेराव किया। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गुरुग्राम विश्वविद्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम पधारे नौजवान बच्चों एवं छात्रों तथा युवाओं ने काले झंडे दिखाकर इस बात का विरोध किया। उनके साथ जिला कांग्रेस के दोनों अध्यक्ष एनएसयूआई अध्यक्ष एवं कांग्रेस अध्यक्ष भी थीं। झंडा दिखाने के बाद पुलिस द्वारा जो बर्बरतापूर्वक जो नीति अपनाई, वह बहुत ही निंदनीय है। वह मिलकर आए हैं, उन बच्चों के साथ मारपीटाई की गई। एक बड़ी बात उनके परिवार को लोगों के साथ भी मार पीटाई की



मंडी अटेली।। प्रेस कॉन्फ्रेंस करते कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह।

फोटो: हरिभूमि

गई। जो बेहत ही गलत है।

उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक तरीके से काले झंडे दिखाकर सरकार के खिलाफ विरोध दर्ज कराना कोई अपराध नहीं है, लेकिन भाजपा सरकार युवाओं की आवाज सुनने के बजाय एफआईआर गिरफ्तारी एवं पुलिसिया दमन का सहारा ले रही है। गुरुग्राम

में शांतिपूर्ण विरोध करने वाले कांग्रेसियों के खिलाफ सिविल लाइंस थाने में एफआईआर दर्ज की गई और गिरफ्तारियों की जा रही हैं। यह कार्रवाई लोकतंत्र में मिले शांतिपूर्ण विरोध और अपनी बात रखने के अधिकार पर सीधा हमला है। सरकार को चाहिए कि वह युवाओं की आवाज सुने नहीं कि पुलिस के जरिए

» **ये रहे मौजूद**

मौके जिला अध्यक्ष सत्यवीर यादव झूकिया, अटेली ब्लॉक अध्यक्ष सुमेर बिहाली, पंचायती राज जिला अध्यक्ष सुरेंद्र पाराशर, बलवंत सिंह, प्रोफेसर राजबीर, नरेंद्र अटाली, जयपाल, सुमेर, बाबूलाल, अनुज जांगड़ा, अशोक प्रधान, सदीप बेवल, बिल्लू, भूपसिंह, महेंद्र चौहान, अतुल यादव, संतोष बाबू, रमेश नंबरदार, पवन सिंह, रोशन, मंगतू राम, सुभाष सिलारपुर, जेअद सिंह, सुबेदार नंदराम, शिवहरी मारछान, सुनील शर्मा, राजाराम व पिंटू मिर्जापुर आदि कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उनकी आवाज दबाने का प्रयास करे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि गिरफ्तार किए गए युवाओं के परिवारों को भी परेशान किए जाने की शिकायतें सामने आ रही हैं। उन्होंने नायब सैनी सरकार से मांग की कि सभी गिरफ्तार युवाओं को तत्काल रिहा किया जाए।

नप ने सात-आठ साल से अधूरे फुटपाथ को पूरा करने के लिए करवाई थी खुदाई

वन विभाग के नोटिस से फुटपाथ निर्माण अटका, डेढ़ महीने से खुदे पड़े हैं गड्डे

►► **सड़क किनारे बने गड्ढों से हादसे का खतरा, स्कूल बसों को भी परेशानी**

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

शहर के रेवाड़ी रोड पर वर्षों से अधूरे पड़े फुटपाथ को पूरा कराने की नगर परिषद की कवायद फिलहाल वन विभाग के नोटिस के कारण अटक गई है। नगर परिषद ने करीब डेढ़ माह पहले सड़क किनारे फुटपाथ निर्माण के लिए काफी लंबे हिस्से में दो से ढाई फुट तक गहरी खुदाई करवा दी थी, लेकिन इसके बाद वन विभाग ने नियमों का हवाला देते हुए काम रुकवा दिया। ऐसे में सड़क किनारे खुदाई के बाद बने गड्ढे अब भी खुले पड़े हैं। इससे राहगीरों, वाहन चालकों और आसपास के लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और हादसे का खतरा भी बना हुआ है।

गौर ही कि नगर परिषद की ओर से रेवाड़ी रोड पर लंबे समय से अधूरे पड़े फुटपाथ को पूरा कराने की योजना बनाई गई थी। जुलाई माह के पहले सप्ताह में इसके लिए सड़क के किनारों पर खुदाई शुरू करवाई गई। जिस हिस्से में पहले से फुटपाथ की बरम तैयार थी, उस छोड़कर आगे के हिस्से में नई खुदाई की



नारनौल। सड़क किनारे दुकान के सामने खुदाई का एक नमूना।

फोटो: हरिभूमि

यह कहता है वन विभाग

नप रेवाड़ी रोड पर पक्के फुटपाथ का निर्माण करना चाह रही है, लेकिन सड़क से करीब तीन फुट बाद ही वन विभाग की जमीन शुरू हो जाती है। यह जमीन पेड़-पौधों और हरियाली के लिए सुरक्षित है। नप यदि सड़क से मकानों तक पूरा फुटपाथ बनाती है तो हरियाली के लिए जगह नहीं बचेगी। इसी कारण नोटिस दिया गया है। नप ने फुटपाथ निर्माण के लिए वन विभाग से अनापति प्रमाण पत्र भी नहीं लिया था। पहले विभाग की जमीन से संबंधित औपचारिकता पूरी करनी होगी।

-रजनीश यादव, वन राजिक अधिकारी

यह कहती है नगर परिषद

नगर परिषद के अनुसार रेवाड़ी रोड पर गंदे नाले से जंगलात तक पक्के फुटपाथ का निर्माण कराया जा रहा है। सड़क के एक तरफ फुटपाथ पहले ही बना हुआ है, जबकि दूसरी तरफ का अधूरा फुटपाथ पूरा किया जाना है। इसी उद्देश्य से बची हुई जगह में निर्माण शुरू किया गया था, लेकिन वन विभाग ने नोटिस जारी कर काम रुकवा दिया। अब अनापति प्रमाण पत्र समेत सीमा औपचारिकताएं पूरी की जा रही हैं। प्रक्रिया पूरी होते ही फुटपाथ निर्माण दोबारा शुरू कराया जाएगा।

-पवन यादव, जेई, नगर परिषद, नारनौल

गई, ताकि वहां भी बरम तैयार कर पक्का फुटपाथ बनाया जा सके। इसी दौरान सड़क किनारे खुदाई होते देख वन विभाग ने नगर परिषद को नोटिस जारी कर दिया। वन विभाग

का कहना है कि सड़क से करीब तीन फुट बाद ही उसकी जमीन शुरू हो जाती है। यह जमीन हरियाली और पेड़-पौधों के लिए सुरक्षित की गई है।

चोरी की झूठी सूचना का खुलासा कॉलर के खिलाफ की कार्रवाई

महेंद्रगढ़। सिरसा वासी प्रेम कुमार सतनाली के राजकीय महाविद्यालय के पास हिराये पर रहता है। उसने 20 अगस्त को शाम करीब 4:35 बजे डायल-112 पर सूचना दी गई कि उसके नौकर विकास निवासी गंगधारा जिला हिसार ने दुकान में बने मकान के कमरे की अलमारी से 10 लाख 50 हजार रुपये चोरी कर लिए हैं। सूचना प्राप्त होते ही सतनाली पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए तकनीकी सहायता के माध्यम से विकास को तोलाश मन बस स्टैंड से काबू कर थाना सतनाली लाया। पुलिस द्वारा दोनों पक्षों को आमने-सामने बैठाकर मामले की गहनता से तस्दीक की गई। जांच के दौरान शिकायतकर्ता द्वारा दी गई चोरी की सूचना असत्य पाई गई तथा 10 लाख 50 हजार रुपये की चोरी होने की भी कोई पुष्टि नहीं हुई। पुलिस जांच में सामने आया कि विकास अपने घर जाना चाहता था और प्रेम कुमार के पास काम नहीं करना चाहता था। इसी कारण उस पर ख़ाब बगाने के उद्देश्य से प्रेम कुमार ने चोरी की झूठी सूचना दी गई थी। मामले की जांच के उपरान्त लोक सेवक को गलत/झूठी सूचना देने के संबंध में शिकायतकर्ता प्रेम कुमार के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 217 के तहत बिचमानुसार कार्रवाई अमल में लाई गई।

50 घरों व दुकानों के आगे बने अवैध निर्माणों पर चला पीला पंजा

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

नगर परिषद ने शनिवार को शहर में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस दौरान नलापुर चौक से छिपी जोहड़ तक सड़क किनारे किए गए अतिक्रमण हटाया गया। जिसमें करीब 50 घरों व दुकानों के आगे बने चबूतरें तथा अन्य अवैध निर्माणों पर जेसीबी का पीला पंजा चला। कार्रवाई के दौरान कई लोगों ने विरोध भी जताया और नगर परिषद की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए। मगर टीम ने पुलिस की मौजूदगी में लोगों की ओर से किए गए कर्जों को हटा दिया।

अभियान नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी जोगेंद्र सिंह व भवन निरीक्षक प्रवीण की मौजूदगी में



नारनौल। अतिक्रमण हटाती जेसीबी मशीन। फोटो: हरिभूमि

चलाया गया। नगर परिषद की टीम ने सड़क और सार्वजनिक भूमि पर किए गए अतिक्रमणों को हटाते हुए कई स्थानों पर तोड़फोड़ की। कार्रवाई के दौरान

सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल भी मौजूद रहा। अभियान के दौरान एक मकान मालिक ने अधिकारियों को अपने भवन का स्वीकृत नक्शा दिखाया। दस्तावेजों की जांच के बाद नगर परिषद की टीम ने उसके निर्माण को नहीं हटाया। वहीं अन्य स्थानों पर कार्रवाई जारी रही। मौसल्ले के लोगों ने आरोप लगाया कि नगर परिषद ने केवल सात लोगों को ही पहले नोटिस जारी किए थे, जबकि कार्रवाई करीब 50 लोगों के खिलाफ की गई। उनका कहना था कि बिना पूर्व सूचना के अतिक्रमण हटाने से उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। यदि सभी प्रभावित लोगों को पहले नोटिस दिए जाते, तो वे अपना सामान व निर्माण सामग्री सुरक्षित हटा सकते थे।

कई वर्षों पुराना था कब्जा

स्थानीय लोगों ने कहा कि जिन निर्माणों को हटाया गया, उनमें से कई वर्षों पुराने थे। उनका आरोप था कि नगर परिषद ने चर्यात्मक कार्रवाई की है। हालांकि नगर परिषद अधिकारियों का कहना है कि सार्वजनिक भूमि पर किए गए अतिक्रमण हटाने का अभियान आगे भी जारी रहेगा और शहर की सड़कों एवं सार्वजनिक स्थानों को अतिक्रमण मुक्त बनाया जाएगा।

जन परिवेदना समिति की मासिक बैठक कल

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौल

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री विपुल गोयल 24 अगस्त को दोपहर 12 बजे राजकीय पीजी महाविद्यालय सभागार में जिला लोक संपर्क एवं जन परिवेदना समिति की मासिक बैठक लेंगे। इसमें पहले से निर्धारित 11 मामले सुनवाई के लिए रखे जाएंगे, जिनका संबंधित विभाग के अधिकारियों द्वारा समाधान किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए उपायुक्त अनुपमा अंजली ने बताया कि पंचायती राज नारनौल का एक, नगर परिषद/ हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण/पशुपालन एवं डेयरिंग विभाग का एक, जिला नगरीय आयुक्त/नगर परिषद/जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग/ नगर पालिका कनीना का एक, अतिरिक्त उपायुक्त/लोक निर्माण विभाग का एक, पुलिस अधीक्षक के दो, जिला नगरीय आयुक्त/ नगर परिषद का एक, दक्षिणी हरियाणा बिजली वितरण निगम नारनौल के दो, जिला शिक्षा विभाग का एक तथा जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी

■ **राजकीय पीजी महाविद्यालय सभागार में पहले से निर्धारित 11 मामले सुनवाई के लिए रखे जाएंगे**

का एक मामला सुनवाई के लिए रखा जाएगा। उन्होंने बताया कि गांव मालड़ा सराय के महेंद्र सिंह, गोपाल सिंह व अन्य निवासीगण, हुडा सेक्टर एक के आरडब्ल्यूए एवं समस्त निवासीगण, कनीना के महाराज विजय दास शिष्य जानकी दास, आश्रम पीपला वाली

बणी एवं समस्त क्षेत्रवासी, डोहर कलां के प्रवीण कुमार, बनिहाड़ी के नितिन, ताजपुर के देवेन्द्र, मोहल्ला नलापुर नारनौल के मुकेश कुमार, विपिन कुमार सेनी व अन्य मोहल्ला निवासीगण, कोथल खुर्द की सरपंच रजनी देवी, राता कलां के नरेंद्र, वाई नंबर 25 नारनौल के नगर पार्श्व अजय सिंघल, संजय कुमार व अमन तथा गांव नावदी के अशोक कुमार का मामला सुनवाई के लिए रखा जाएगा।

बी.पी.एड. (B.P.Ed.) में दाखिला आरंभ
पी.टी.आई. तथा डी.पी.ई. (शांतिरक शिक्षा निदेशक) के पद पर होगी नियुक्ति
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त एवं इंडियन गैरी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी (IGU) से सम्बंध महााणा प्रताप कालेज ऑफ एजुकेशन, धनीन्दा (ब्याक - कनीना), जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) में सत्र 2026-28 हेतु बी.पी.एड. (B.P.Ed.) (डी.पी.ई. को) में दाखिला आरंभ हो गया है। बी.पी.ई. में प्रवेश हेतु स्नातक में 50% अंक तथा राज्य स्तर का प्रवेश का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है। एस.सी. विद्यार्थियों को सरकार द्वारा काब्युक्ति दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी सीधे कॉलेज में दाखिला ले सकते हैं तथा www.mpcokenania.com व कॉलेज चीन नं. 9467834482, 8053910428 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (Adv.)



दोस्त या रिश्तेदार की मदद पड़ेगी भारी

लोन में गारंटर बनने के कई नुकसान

बिजनेस डेस्क

दोस्त, रिश्तेदार या करीबी व्यक्ति मुश्किल समय में आर्थिक मदद मांगता है तो मना करना आसान नहीं होता। कई बार व्यक्ति खुद लोन लेने की स्थिति में होता है, लेकिन बैंक की शर्तों के कारण उसे गारंटर की जरूरत पड़ती है। ऐसे में भावनात्मक रिश्ते के कारण लोग बिना पूरी जानकारी लिए लोन गारंटर बनने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन गारंटर बनना महज एक औपचारिकता नहीं है। इसका अर्थ है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी देनदारी पूरी नहीं करता, तो गारंटी की शर्तों के अनुसार बैंक आपसे भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। इसलिए किसी के लोन की गारंटी देने से पहले यह समझना जरूरी है कि इससे आपके क्रेडिट रिकॉर्ड, भविष्य में लोन लेने की क्षमता और व्यक्तिगत वित्त पर क्या असर पड़ सकता है।

गारंटर बनने का मतलब क्या

लोन में गारंटर वह व्यक्ति होता है जो बैंक या वित्तीय संस्थान को यह आश्वासन देता है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता तो लागू गारंटी की शर्तों के अनुसार वह देनदारी पूरी करेगा। इसलिए किसी दस्तावेज पर सिर्फ इसलिए हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए कि सामने वाला दोस्त या रिश्तेदार है। हस्ताक्षर करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आप किस रकम, किस अवधि और किन शर्तों के लिए गारंटी दे रहे हैं।

गारंटर बनते ही क्रेडिट स्कोर घटता है

नहीं, केवल गारंटर बनने से अपने आप क्रेडिट स्कोर खराब होना जरूरी नहीं है। अगर मुख्य उधारकर्ता समय पर ईएमआई चुका रहा है और लोन खाते में कोई डिफॉल्ट नहीं हो रहा है, तो सामान्य तौर पर केवल गारंटर होने की वजह से आपके क्रेडिट रिकॉर्ड पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता। लेकिन समस्या तब शुरू हो सकती है जब मुख्य उधारकर्ता ईएमआई चुकाने में लगातार चूक करता है। ऐसी स्थिति में लोन खाते से जुड़ी डिफॉल्ट जानकारी गारंटर के क्रेडिट प्रोफाइल को भी प्रभावित कर सकती है। लगातार भुगतान में चूक होने से भविष्य में आपकी क्रेडिट हिस्ट्री पर नकारात्मक असर पड़ने का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए गारंटर बनने के बाद भी लोन की स्थिति पर नजर रखना जरूरी है।

बड़ा खतरा : कर्ज चुकाने की जिम्मेदारी

गारंटर बनने का सबसे महत्वपूर्ण जोखिम आर्थिक है। यदि मुख्य उधारकर्ता लोन की किस्तें नहीं चुका पाता है तो बैंक या वित्तीय संस्थान गारंटी समझौते की शर्तों के अनुसार गारंटर से भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। यानी जिस लोन का पैसा आपने लिया ही नहीं, उसकी जिम्मेदारी कुछ परिस्थितियों में आपके ऊपर भी आ सकती है। यही वजह है कि गारंटर बनने से पहले यह सवाल खुद से जरूर पूछें। अगर सामने वाला व्यक्ति कल से ईएमआई देना बंद कर दे तो क्या में इस लोन की जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ? अगर इसका जवाब 'नहीं' है तो अगर रिश्तेदारी या दोस्ती के दबाव में गारंटर बनना जोखिम भरा हो सकता है।

लोन लेने में आ सकती है दिक्कत

गारंटर बनने का असर केवल क्रेडिट स्कोर तक सीमित नहीं है। जब आप भविष्य में होम लोन, कार लोन या कोई अन्य बड़ा कर्ज लेने के लिए अपेदन करते हैं तो बैंक आपकी मौजूदा वित्तीय जिम्मेदारियों और क्रेडिट प्रोफाइल का आकलन कर सकता है। जिस लोन की आपने गारंटी दी है, वह आपकी वित्तीय प्रोफाइल के आकलन में महत्वपूर्ण हो सकता है। खासकर यदि उस लोन में भुगतान संबंधी समस्या चल रही हो तो आपके लिए नया कर्ज लेना कठिन हो सकता है या बैंक अतिरिक्त जांच कर सकता है।

रिश्तेदार है तो भी पहले जांच करें

गारंटर बनने से पहले केवल रिश्ते को आधार न बनाएं। यह जानना जरूरी है कि जिस व्यक्ति के लोन की गारंटी आप दे रहे हैं, उसकी आय कितनी है, उसकी मौजूदा ईएमआई कितनी है और उस पर पहले से कितना कर्ज है। यह भी देखें कि उसकी बीमारी या कारोबार कितना स्थिर है। यदि उसकी आय अनिश्चित है या पहले से कई कर्ज चल रहे हैं तो गारंटर बनने का जोखिम बढ़ सकता है।

दस्तावेज पढ़े बिना न करें हस्ताक्षर

गारंटी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले बैंक से स्पष्ट रूप से पूछें कि आपकी जिम्मेदारी की सीमा क्या है। क्या गारंटी केवल मूल रकम तक सीमित है या इसमें ब्याज, शुल्क और अन्य देनदारियां भी शामिल हो सकती हैं? यह जानकारी दस्तावेज की शर्तों से ही स्पष्ट होगी। इसलिए किसी बैंक कर्मचारी, एजेंट या परिचित के कहने मात्र पर दस्तावेज पर हस्ताक्षर न करें। जरूरत हो तो स्वतंत्र वित्तीय या कानूनी सलाह भी ली जा सकती है।

ईएमआई की जानकारी लेते रहें

अगर आपने किसी के लोन की गारंटी दी है तो यह मानकर न चले कि अब आपकी कोई भूमिका नहीं है। मुख्य उधारकर्ता से समय-समय पर ईएमआई भुगतान की स्थिति की जानकारी लेते रहें। किसी भुगतान में देरी की जानकारी मिले तो समस्या बढ़ने से पहले उधारकर्ता से बात करें। शुरुआती स्तर पर समस्या का समाधान करना लंबे समय तक चलने वाले डिफॉल्ट से बेहतर है।

दोस्ती और पैसा, दोनों को अलग रखें

किसी करीबी की मदद करना अच्छी बात है, लेकिन मदद का अर्थ अपनी आर्थिक सुरक्षा को जोखिम में डालना नहीं होना चाहिए। यदि आपको लगता है कि सामने वाला व्यक्ति लोन चुकाने की स्थिति में नहीं है तो गारंटर बनने के बजाय अपनी क्षमता के अनुसार सीमित आर्थिक सहायता करना ज्यादा सुरक्षित विकल्प हो सकता है।

फैसला लेने से पहले ये जरूर पूछें

- » क्या मैं इस व्यक्ति की आय और मौजूदा कर्ज को समझता हूँ?
- » अगर वह ईएमआई नहीं चुका पाया तो क्या मैं संभावित वित्तीय जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ?
- » क्या मैंने गारंटी दस्तावेज की सभी शर्तें पढ़ी हैं?
- » क्या भविष्य में मुझे खुद होम, कार या किसी दूसरे बड़े लोन की जरूरत पड़ सकती है?

मदद करें, लेकिन जोखिम समझकर

लोन गारंटर बनना दोस्त या रिश्तेदार की मदद करने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन इसमें वित्तीय जोखिम भी जुड़ा है। समय पर ईएमआई वाली रकमे पर समस्या नहीं आती, लेकिन मुख्य उधारकर्ता के डिफॉल्ट की स्थिति में गारंटर की क्रेडिट प्रोफाइल और आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। इसलिए गारंटर बनने से पहले भावनात्मक रिश्ते से ज्यादा महत्वपूर्ण अपनी भुगतान क्षमता, दस्तावेज की शर्तों और भविष्य की वित्तीय जरूरतों को समझना है। किसी की मुश्किल में साथ देना अच्छी बात है, लेकिन ऐसी मदद न करें जो बाद में आपके ही परिवार की आर्थिक सुरक्षा को मुश्किल में डाल दे।

दस साल में चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न

10 वर्ष में 4 लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न, हर माह 10000 की एसआईपी से 12 लाख का निवेश 31 लाख से ज्यादा, चारों फंडों ने दिया 18 से 19% तक एक्सआईआरआर

निवेश नत्रा बिजनेस डेस्क

लंबी अवधि में संपत्ति बनाने के लिए म्यूचुअल फंड की लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी निवेशकों के लिए एक विकल्प हो सकती है। इस श्रेणी के फंड बड़ी और स्थापित कंपनियों के साथ मध्यम आकार की तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों में निवेश करते हैं। नियमों के अनुसार, ऐसे फंडों को कम से कम 35 प्रतिशत राशि लार्ज कैप और 35 प्रतिशत मिड कैप कंपनियों में लगानी होती है। इस तरह कम से कम 70 प्रतिशत पोर्टफोलियो देश की बाजार पूंजीकरण के लिहाज से शीर्ष 250 कंपनियों में रहता है। 18 अगस्त 2026 को उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ऐसे रहे, जिनमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 31 लाख रुपये से ज्यादा हो गया। इनमें सबसे बेहतर प्रदर्शन इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड का रहा, जिसने 19.3 प्रतिशत का एक्सआईआरआर दिया।

इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड

इस सूची में इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड पहले स्थान पर है। अगस्त 2007 में शुरू हुआ यह फंड पहले इनवेस्को इंडिया ग्रोथ अपॉय्च्युनिटीज फंड के नाम से जाना जाता था। फंड शेयरों का चयन करने के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर, दोनों तरह की रणनीति का इस्तेमाल करता है। इसमें किसी एक सेक्टर या निवेश शैली पर अत्यधिक निर्भरता नहीं रखी जाती। इस फंड में 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 33.2 लाख रुपये हो गया। इस आधार पर इसका एक्सआईआरआर 19.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में इंटरनेल, मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट, इंटरग्लोब एविएशन, आईसीआईसीआई बैंक और प्रेस्टिज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, करीब 38.1 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 35.9 प्रतिशत मिड कैप और 23.1 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में था।



क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। दिसंबर 2006 में शुरू हुआ यह फंड शेयरों के चयन में आंकड़ों पर आधारित रणनीति अपनाता है। फंड हाउस का वीएलआरटी ढांचा कंपनियों के मूल्यांकन, नकदी की उपलब्धता, जोखिम और निवेश के सही समय जैसे पहलुओं को ध्यान में रखता है। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की

एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.3 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में लॉयड्स मेटलस एंड एनर्जी, ऑरोबिंदो फार्मा, संवर्धन मदर्सन इंटरनेशनल, अडानी एंटरप्राइजेज और अडानी ग्रीन एनर्जी शामिल रहे। पोर्टफोलियो में करीब 38.2 प्रतिशत लार्ज कैप, 33.1 प्रतिशत मिड कैप और 5.2 प्रतिशत स्मॉल कैप में निवेश था।

निवेश के ये फॉर्मूले, अपनाएं कभी नहीं रहेगा पैसे का संकट

जानकारी बिजनेस डेस्क

पैसे को दोगुना से चार गुना तक आसानी से कर सकेंगे

इमरजेंसी फंड व इक्विटी डेट का संतुलन बनाएंगे

निवेश की दुनिया में विकल्पों की कोई कमी नहीं है। बैंक एफडी, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, इक्विटी, डेट और सोने जैसे कई माध्यमों में पैसा लगाया जा सकता है। लेकिन निवेश में सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि पैसा कहाँ लगाया गया है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि कितनी राशि निवेश की जा रही है, कितने समय के लिए निवेश किया जा रहा है और जोखिम को किस तरह नियंत्रित किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से वित्तीय योजना में कुछ आसान नियमों का इस्तेमाल किया जाता है। इन नियमों की मदद से निवेशक मोटे तौर पर यह समझ सकता है कि उसका पैसा कितने समय में दोगुना या चार गुना हो सकता है, आय का कितना हिस्सा खर्च और बचत में जाना चाहिए तथा इमरजेंसी के लिए कितनी रकम अलग रखनी जरूरी है। हालांकि ये नियम अनुमान देने वाले सामान्य वित्तीय फॉर्मूले हैं, इन्हें निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए।

रूल ऑफ 72, 114 और 144 कंपाउंडिंग को समझने के आसान तरीके हैं, जबकि 50-30-20, 100 माइनस एज और 10 फीसदी निवेश जैसे नियम व्यक्तिगत वित्त को व्यवस्थित करने में मदद कर सकते हैं। लेकिन किसी भी नियम को अंतिम निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। सही रणनीति बनाने के लिए निवेशक को अपनी आय, उम्र, जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य, कर्ज और निवेश की अवधि को ध्यान में रखना चाहिए। सबसे जरूरी बात यह है कि पहले इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा जैसी वित्तीय सुरक्षा तैयार करें, फिर लक्ष्य के मुताबिक नियमित और अनुशासित निवेश करें। निवेश में जल्द अमीर बनने के बजाय लंबे समय तक टिके रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

1. रूल ऑफ 72

रूल ऑफ 72 का इस्तेमाल यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि किसी निवेश को दोगुना होने में लगभग कितना समय लग सकता है। इसके लिए 72 को अनुमानित सालाना रिटर्न से भाग दिया जाता है।

फॉर्मूला: 72 ÷ अनुमानित रिटर्न = पैसा दोगुना होने का अनुमानित समय

उदाहरण के लिए, अगर किसी निवेश से सालाना 12 फीसदी रिटर्न मिलने की उम्मीद है तो 72÷12 = 6। यानी अनुमान के तौर पर पैसा करीब छह साल में दोगुना हो सकता है। इसी तरह चार साल में पैसा दोगुना करने के लिए करीब 18 फीसदी सालाना रिटर्न की जरूरत होगी। बाजार आधारित निवेश में वास्तविक रिटर्न अलग हो सकता है।

2. रूल ऑफ 114

अगर आप यह जानना चाहते हैं कि आपका निवेश लगभग कितने समय में तीन गुना हो सकता है तो रूल ऑफ 114 इस्तेमाल किया जाता है।

फॉर्मूला: 114 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = 12 फीसदी अनुमानित सालाना रिटर्न के मामले में 114÷12 = 9.5 साल। यानी इस फॉर्मूले के अनुसार निवेश को तीन गुना होने में करीब साढ़े नौ साल लग सकते हैं।

3. रूल ऑफ 144

रूल ऑफ 144 से यह अनुमान लगाया जाता है कि निवेश कितने समय में चार गुना हो सकता है।



फॉर्मूला: 144 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = अगर अनुमानित रिटर्न 12 फीसदी सालाना है तो 144÷12 = 12 साल। यानी इस गणना के अनुसार पैसा करीब 12 साल में चार गुना हो सकता है। कंपाउंडिंग का असर लंबी अवधि में निवेश की वृद्धि को काफी प्रभावित करता है।

4. 50-30-20 रूल

मासिक बजट को व्यवस्थित रखने के लिए 50-30-20 नियम काफी लोकप्रिय है। इसके अनुसार आय का करीब 50 फीसदी हिस्सा जरूरी खर्चों, 30 फीसदी गैर-जरूरी जरूरतों या इच्छाओं और 20 फीसदी बचत एवं निवेश के लिए रखा जा सकता है।

हालांकि हर व्यक्ति की आय, पारिवारिक

जिम्मेदारियां और खर्च अलग होते हैं। इसलिए इसे एक शुरुआती बजटिंग फ्रेमवर्क की तरह इस्तेमाल करना बेहतर है। जिन लोगों पर कर्ज का बोझ अधिक है, वे निवेश से पहले महंगे कर्ज को कम करने पर भी ध्यान दे सकते हैं।

5. 100 माइनस एज रूल

निवेश पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का अनुपात तय करने के लिए 100 माइनस एज नियम का इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसमें निवेशक की उम्र को 100 से घटाया जाता है। बची हुई संख्या को इक्विटी में निवेश का संभावित प्रतिशत माना जाता है। मसलन, 30 साल के निवेशक के लिए 100-30 यानी 70 फीसदी इक्विटी और 30 फीसदी डेट का

निवेश हरिभूमि 8

बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड

चौथे स्थान पर बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। अगस्त 2005 में शुरू हुआ यह फंड पहले बंधन कोर इक्विटी फंड और उससे पहले आईडीएफसी कोर इक्विटी फंड के नाम से जाना जाता था। इसका उद्देश्य अच्छी तरह संवर्धित और टिकाऊ कारोबार वाली ऐसी कंपनियों में निवेश करना है, जिनके शेयर उचित मूल्यांकन पर उपलब्ध हों। इसमें 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का कुल निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, वलेंट कन्सुलिकेंशंस और इंफोसिस शामिल रहे। पोर्टफोलियो में करीब 39.4 प्रतिशत लार्ज कैप, 36.2 प्रतिशत मिड कैप और 18.6 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में निवेश था।

सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश न करें

इन फंडों के 10 साल के आंकड़े आकर्षक जरूर हैं, लेकिन केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला करना उचित नहीं है। लार्ज एंड मिड कैप फंड में मिड कैप कंपनियां का पर्याप्त हिस्सा होता है। इसलिए शेयर बाजार में बड़ी गिरावट आने पर इन फंडों में भी तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। निवेशकों को फंड का प्रदर्शन अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में देखना चाहिए। यह देखना जरूरी है कि फंड ने अपने बेचमार्क और समान श्रेणी के दूसरे फंडों की तुलना में कितनी निरंतरता दिखाई है। इसके अलावा फंड की निवेश रणनीति, पोर्टफोलियो की गुणवत्ता, जोखिम और खर्च जैसे पहलुओं को भी समझना चाहिए।

अनुपात माना जा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ इक्विटी का हिस्सा कम करने का विचार जोखिम को नियंत्रित करने से जुड़ा है।

6. न्यू, 10% निवेश नियम

इस नियम के अनुसार आय का कम से कम 10 फीसदी हिस्सा लंबी अवधि के लक्ष्यों के लिए निवेश किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात नियमित निवेश है। आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाते रहना चाहिए। मसलन, अगर किसी व्यक्ति की मासिक आय 50 हजार रुपये है तो शुरुआत में कम से कम 5 हजार रुपये लंबी अवधि के निवेश के लिए अलग रखे जा सकते हैं। भविष्य में वृद्धि बढ़ने पर निवेश राशि बढ़ाने से कंपाउंडिंग का लाभ और मजबूत हो सकता है।

7. इमरजेंसी फंड रूल

सारी बचत को निवेश कर देना समझदारी नहीं है। अचानक नौकरी जाने, बीमारी, घर की मरम्मत या किसी अन्य आपात स्थिति में तुरंत उपलब्ध पैसे की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए कम से कम छह महीने के जरूरी खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह दी जाती है। अगर किसी परिवार का जरूरी मासिक खर्च 40 हजार रुपये है तो छह महीने के दिहाब से करीब 2.4 लाख रुपये का आपातकालीन फंड लगाना या सकता है। इस रकम को ऐसे माध्यम में रखना बेहतर होता है जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो।

पैसा सुरक्षित दिखने के बावजूद कम रिटर्न देने वाला निवेश कर सकता है नुकसान

पहचानें और समय रहते लें फैसला इससे परेशानी से बचा जा सकेगा

अलर्ट बिजनेस डेस्क

निवेश करते समय ज्यादातर लोग इस बात पर ध्यान देते हैं कि उनका पैसा डूब तो नहीं रहा। लेकिन केवल मूल रकम सुरक्षित रहना ही अच्छे निवेश की निशानी नहीं है। अगर आपका पैसा लंबे समय तक ऐसे निवेश में फंसा हुआ है, जो मामूली या लगभग शून्य रिटर्न दे रहा है, तो वह देखने में सुरक्षित होने के बावजूद आपकी संपत्ति बढ़ाने की क्षमता को कमजोर कर सकता है। निवेश की दुनिया में ऐसे निवेश की आमतौर पर 'डेड मनी' कहा जाता है। 'डेड मनी' का मतलब किसी ऐसे निवेश से है, जिसमें पैसा लगा हुआ है, लेकिन लंबे समय से उस पर अपेक्षित वृद्धि नहीं हो रही। जरूरी नहीं कि ऐसे निवेश में निगेटिव रिटर्न ही मिल रहा हो। कई बार निवेश का मूल्य थोड़ा बढ़ता है, लेकिन महंगाई और दूसरे सामान निवेशों के मुकाबले उसका प्रदर्शन इतना कमजोर होता है कि पैसा प्रभावी रूप से निष्क्रिय पड़ा रहता है।

पोर्टफोलियो में पड़ा 'डेड मनी' कहीं आपकी कमाई तो नहीं रोक रहा ?

कैसे पहचानें डेड मनी ?

हर कमजोर प्रदर्शन करने वाले फंड को तुरंत बेच देना सही रणनीति नहीं है। बाजार में अलग-अलग समय पर अलग-अलग कैटेगरी का प्रदर्शन बदलता रहता है। इसलिए किसी निवेश को डेड मनी मानने से पहले कुछ महत्वपूर्ण संकेतों को देखना चाहिए। पहला संकेत है लंबी अवधि तक कमजोर प्रदर्शन। अगर कोई फंड लगातार कई निमाहियों तक कमजोर बना हुआ है और उसके प्रदर्शन में सुधार के संकेत नहीं मिल रहे हैं, तो इसकी समीक्षा जरूरी है। केवल एक-दो खराब तिमाही के आधार पर फैसला नहीं लेना चाहिए। दूसरा संकेत है समान कैटेगरी के फंडों से लगातार पिछड़ना। अगर आपके फंड की कैटेगरी के दूसरे फंड लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं और आपका फंड लंबे समय तक पीछे बना हुआ है, तो यह चिंता का कारण हो सकता है। तीसरा संकेत है निवेश रणनीति में बदलाव। अगर फंड की रणनीति, फंड मैनेजर, पोर्टफोलियो या जोखिम प्रोफाइल में बड़ा बदलाव हुआ है तो यह देखना जरूरी है कि मौजूदा निवेश अभी भी आपके लक्ष्य के अनुकूल है या नहीं।

मूल पैसा सुरक्षित फिर भी नुकसान

मान लीजिए आपके पास एक लाख रुपये हैं और आपने उन्हें ऐसे फंड में लगा रखा है, जो लंबे समय तक बहुत कम रिटर्न दे रहा है। एक-दो साल बाद भी अगर आपकी रकम लगभग उतनी ही है, तो पहली नजर में लग सकता है कि आपको कोई नुकसान नहीं हुआ। लेकिन इसी अवधि में बाजार के दूसरे समान फंडों ने बेहतर प्रदर्शन किया हो तो आपका पैसा वहां ज्यादा बढ़ सकता था। यहीं 'अपॉयुनिटी कॉस्ट' सामने आती है। यानी जिस निवेश में आपका पैसा अटका रहा, उसकी वजह से आप बेहतर रिटर्न वाले दूसरे अवसर का फायदा नहीं उठा पाए। इसलिए निवेश में केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि पैसा घटा या बढ़ा, बल्कि यह भी देखना जरूरी है कि वह आपके लक्ष्य के मुताबिक पर्याप्त गति से बढ़ रहा है या नहीं।

पोर्टफोलियो की समय समय पर करें समीक्षा

'डेड मनी' से बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि पोर्टफोलियो को लंबे समय तक बिना देखे न छोड़ें। साल में कम से कम एक या दो बार निवेश की समीक्षा की जा सकती है। इसमें यह देखना चाहिए कि कौन सा निवेश लक्ष्य के मुताबिक प्रदर्शन कर रहा है, कौन लगातार पिछड़ रहा है और क्या पोर्टफोलियो में जोखिम का संतुलन बना हुआ है। निवेश का उद्देश्य सिर्फ पैसा सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि उसे अपने वित्तीय लक्ष्यों के मुताबिक बढ़ाना भी है। इसलिए किसी निवेश में पैसा सिर्फ इस वजह से नहीं पड़ा रहना चाहिए कि उसमें नुकसान दिखाई नहीं दे रहा। अगर पैसा लगातार अपेक्षा से कम बढ़ रहा है, तो उसकी अवसर लागत भी वास्तविक नुकसान है। इसलिए पोर्टफोलियो में मौजूद हर निवेश से समय-समय पर यह सवाल पूछना जरूरी है। क्या यह पैसा मेरे लिए काम कर रहा है या सिर्फ पड़ा हुआ है? यही सवाल आपको 'डेड मनी' पहचानने और बेहतर वित्तीय फैसले लेने में मदद कर सकता है।

खबर संक्षेप

वृहद् हिंदी बाल-कविता संचयन ग्रंथ का विमोचन

नारनौल। पूर्वोत्तर को मुख्य भारत-भूमि से जोड़ती है हिंदी। अब पूर्वोत्तर में हिंदी विवाद की नहीं, संवाद की भाषा बन चुकी है। यह कहना है डिगबोई महिला महाविद्यालय डिगबोई (असम) में हिंदी-विभाग के पूर्व अध्यक्ष तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. हेरराम पाठक का। हुड़ा सेक्टर स्थित अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र मनुमुक्त भवन में आयोजित एक विशिष्ट साहित्यिक संगोष्ठी में उन्होंने स्पष्ट किया कि पूर्वोत्तर के छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रूझान तो बढ़ा ही है। डॉ. हेरराम पाठक के नव-प्रकाशित ग्रंथ 'वृहद् हिंदी बाल-कविता संचयन' का विमोचन मंचस्थ अतिथियों की ओर से किया गया।

आंगनवाड़ी केंद्र में बेटियों का जन्मदिन मनाया

महेंद्रगढ़। गांव माजरा कलां स्थित आंगनवाड़ी केंद्र में शनिवार को सामुदायिक आधारित गतिविधि के दौरान तीन बच्चियों का जन्मदिन मनाया गया। इस दौरान छवि पुत्री पंकज, रिंधि पुत्री मोहित और डिम्पी पुत्री मोहित का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। उपस्थित लोगों ने तीनों बच्चियों को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में बेटियों के जन्म को लेकर सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना, बेटियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और परिवारों को बेटियों के जन्म को खुशी के रूप में मनाने के लिए प्रेरित करना रहा।

गोमाता की सेवा में सराहनीय योगदान

नारनौल। मारुति एंटरप्राइजेज की ओर से श्री उपचार गोशाला में एक पिकअप तुड़ा करीब 40 किंवटल गोमाता की सेवा हेतु दान किया गया। इस अवसर पर भूपेंद्र चौधरी मारुति एंटरप्राइजेज की ओर से उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि गोसेवा केवल सेवा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति व संस्कारों का हिस्सा है। गोमाता के लिए किया गया प्रत्येक छोटा-बड़ा सहयोग समाज के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने सभी गोसेवकों से गोसेवा के इस पुनीत कार्य में बह-चढ़कर सहयोग करने का आह्वान किया। इस मौके पर सुभाष गर्ग, गर्जेंद्र नंबरदार, मुकेश वालिया, रमेश यादव, सतीश भल्ला, रामसिंह सरदार आदि उपस्थित रहे।

बाबा खेतानाथ पार्क में लिया हरियाली का संकल्प

मंडी अटेली। खंड सिंहमा के बाबा खेतानाथ पार्क में पर्यावरण संरक्षण एवं हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौध रोपण अभियान चलाया गया। अभियान के तहत पार्क परिसर में छायादार, फलदार एवं फूलदार प्रजातियों के सैकड़ों पौध लगाई गईं। ग्रामीणों ने भी अभियान में बह-चढ़कर भाग लिया। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि प्रमोद यादव पर अम्मीलाल ठेकेदार ने कहा कि पर्यावरण को स्वच्छ एवं हरा-भरा बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक पौध लगाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि पार्क में लगाई गई पौध आने वाले समय में लोगों को स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने के साथ गर्मी से राहत देने में भी सहायक होंगी। इस मौके पर राधेश्याम सैनी, विक्की आर्य, नीरज कुमार, पंकज, अनुप सहित अन्य ग्रामीणों ने पौधे लगाने में सहयोग किया।

श्रीकृष्णा स्कूल के हर्ष कुमार ने राज्य स्तरीय बॉक्सिंग में जीता ब्रॉन्ज मेडल

महेंद्रगढ़। श्रीकृष्णा स्कूल के बॉक्सिंग खिलाड़ी हर्ष कुमार ने राज्य स्तर पर उल्कूट प्रदर्शन कर अपने स्कूल और जिले का नाम गौरवान्वित किया है। सिवान के भीम स्टेडियम में आयोजित 59वीं राज्य स्तरीय स्कूली मुक्केबाजी प्रतियोगिता में हर्ष ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए ब्रॉन्ज मेडल पर कब्जा किया। खेल प्रशिक्षक व बॉक्सिंग कोच महीपाल यादव ने बताया कि यह प्रतिष्ठित राज्य स्तरीय स्कूली स्पर्धा बीते 18 से 21 अगस्त तक आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाजों ने हिस्सा लिया था। कड़े मुकाबलों के बीच हर्ष कुमार ने बेहतरीन खेल दिखाया। उन्होंने पहले दौर में कैथल के दम्नदर खॉंस्वर आदित्य को धूल चटाकर क्वार्टर फाइनल में अपनी जगह पक्की की। इसके बाद उन्होंने अपने विजय रथ को जारी रखते हुए जींद के बॉक्सर राधर को एकतरफा मुकाबले में मात देकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सेमीफाइनल के कड़े मुकाबले में हर्ष ने शानदार कोशल का प्रदर्शन किया और ब्रॉन्ज मेडल जीतकर जिले का नाम रोशन किया। इस शानदार उपलब्धि पर स्कूल प्रबंधन में भारी हर्ष का माहौल है।

17वें दिन भी जारी रही नगर पालिका कर्मचारियों की हड़ताल
13 मई के समझौते के अनुसार मांगों को लागू करने का परिपत्र जारी करने की मांग

मांगों को लागू करने की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाया

हरिभूमि न्यूज़ ॥ नारनौल

नगर पालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के आह्वान पर संघ इकाई की काम छोड़ हड़ताल शनिवार को 17वें दिन भी जारी रही। कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ रोष जताते हुए 13 मई 2026 को हुई वार्ता में किए गए समझौते को जल्द लागू करने की मांग की।

कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि जब तक सरकार मांगों को लेकर लिखित परिपत्र जारी नहीं करती, तब तक हड़ताल जारी रहेगी और जरूरत पड़ने पर आंदोलन को और तेज किया जाएगा। हड़ताल की अध्यक्षता इकाई प्रधान भूपेंद्र सिंह सारवान ने की। इस दौरान नगर पालिका कर्मचारी संघ के राज्य कैशियर महेंद्र सिंह सिंगेलिया ने कहा कि कर्मचारियों की मांगों को लेकर हरियाणा सरकार से कई बार वार्ता हो चुकी है, लेकिन अभी तक मांगों को लागू करने की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाया गया है। उन्होंने कहा कि 13 मई को हुई वार्ता में सरकार की ओर से कच्चे



नारनौल। नगर परिषद परिसर में धरने पर बैठे सफाई कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर नगर पालिका कर्मचारी संघ जिला प्रधान राहुल सिंह, इकाई सचिव महेंद्र दायमा, सर्व कर्मचारी संघ के पूर्व सचिव महेंद्र बौरा, कोशल यादव, इकाई कैशियर मनोज बौरा, महावीर प्रसाद, भीम सिंह, रोशन लाल, निरंजन लाल, कमल सिंह, संतलाल, कृष्ण कुमार, प्रदीप कुमार, आशीष, अशोक, रमन कुमार, रमाकांत, दीनतराम, मनोज, देवी, पुनम, मंजू, उर्मिला, मीनाक्षी, रेखा, भारती व उषा सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी मौजूद रहे।

कर्मचारियों को पक्का करने की बात कही गई थी, लेकिन अब सरकार अपने वादे से पीछे हटती नजर आ रही है। उन्होंने कहा कि नगर पालिका में अनेक कर्मचारी 10, 15 और 20 वर्षों से लगातार सेवाएं दे रहे हैं।

इन कर्मचारियों ने अपना पूरा जीवन नगर पालिका के काम में लगा दिया, लेकिन आज भी वे कच्चे कर्मचारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। ऐसे में सरकार द्वारा उन्हें नियमित करने में आनाकानी करना कर्मचारियों के साथ अन्याय है।

महेंद्र सिंह सिंगेलिया ने कहा कि कर्मचारियों को अब सरकार के आश्वासन पर भरोसा नहीं रह गया है। जब तक 13 मई के समझौते के अनुसार मांगों को लागू करने का परिपत्र जारी नहीं किया जाता, तब तक हड़ताल समाप्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकार कर्मचारियों की मांगों को गंभीरता से ले और जल्द समाधान करे। हड़ताल में नगर पालिका के सफाई कर्मचारियों के साथ-साथ अग्निशमन विभाग के कर्मचारी भी शामिल रहे।

विद्या भारती स्कूल में जांच शिविर

हरिभूमि न्यूज़ ॥ नारनौल

विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर में विद्यार्थियों के लिए संदीप आई हॉस्पिटल की ओर से नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें चिकित्सकों ने विद्यार्थियों की आंखों की जांच की और उन्हें आंखों की उचित देखभाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। चिकित्सकों ने विद्यार्थियों को मोबाइल एवं अन्य डिजिटल उपकरणों का सीमित उपयोग करने, आंखों की स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। जांच के दौरान जिन विद्यार्थियों को आवश्यकता महसूस हुई, उन्हें उचित परामर्श दिया गया। विद्यालय प्रबंधन ने इस स्वास्थ्य जागरूकता शिविर को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बताते हुए चिकित्सक टीम का आभार व्यक्त किया।



नारनौल। बच्चों की जांच करते चिकित्सक। फोटो: हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव, वाइस चेयरमैन डॉ. उषा यादव, प्रबंधक निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव, निदेशिका डॉ. रविंद्रा यादव, प्राचार्य अजीत सिंह, उपप्राचार्य प्रवीण कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे।

ग्रामीण सफाई कर्मियों ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

महेंद्रगढ़। विधायक कार्यालय पर ग्रामीण सफाई कर्मचारी युनियन हरियाणा ने एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान पवन कुमार वाल्मीकि के नेतृत्व में अपनी लिखित व जायज मांगों को लेकर विधायक कंवर सिंह यादव को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से कर्मचारियों ने अपनी समस्याओं और मांगों को मुख्यमंत्री के समक्ष पहुंचाने की मांग की। जिला प्रधान पवन कुमार वाल्मीकि ने कहा कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी लंबे समय से गांवों में स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए लगातार अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इसके बावजूद उनकी कई मांगें लंबे समय से लंबित हैं। कर्मचारियों ने सरकार से उनकी जायज मांगों पर गंभीरता से विचार करते हुए जल्द समाधान करवाने की मांग की। पवन कुमार ने बताया कि हमारी जो मांगें हैं उनमें कर्मचारियों को पॉलीसी बनाकर पक्का करने, वेतन में बढ़ोतरी आदि मांगें रखी गई हैं। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि ग्रामीण सफाई कर्मचारी गांवों को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनकी सेवाएं ग्रामीण समाज के लिए बेहद जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों द्वारा रखी गई जायज मांगों को गंभीरता से लिया जाएगा। इस मौके पर मोहनलाल कोथल, अमरसिंह, नफे सिंह, जिला सचिव जगदीश प्रसाद सतनाली, कर्मीना ब्लॉक प्रधान दीपक कुमार सभी सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।



महेंद्रगढ़। विधायक को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो: हरिभूमि

राव नेतराम स्कूल में नॉर्थ जोन-2 की हैंडबॉल स्पर्धा शुरू

हरिभूमि न्यूज़ ॥ मंडी अटेली

राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में शनिवार को तीन दिवसीय सीबीएसई नॉर्थ जोन-दो हैंडबॉल प्रतियोगिता का शानदार आगाज हुआ। यह प्रतियोगिता 22 अगस्त से 24 अगस्त तक आयोजित की जा रही है। इस खेल महाकुंभ में हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश की टीमों अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए जुटी हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सिटी मजिस्ट्रेट मंगल सेन तंवर ने सरस्वती मां की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर और रिबन काटकर किया। कार्यक्रम में अटेली के पूर्व विधायक सीताराम यादव ने विशिष्ट



मंडी अटेली। प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए सिटी मजिस्ट्रेट मंगलसेन एवं पूर्व विधायक सीताराम यादव। फोटो: हरिभूमि

अतिथि के रूप में शिरकत की। उद्घाटन समारोह के दौरान मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि ने पांचों राज्यों से आई हैंडबॉल टीमों के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और उनका उत्साहवर्धन

किया। प्रतियोगिता का पहला मैच जम्मू-कश्मीर और रोहतक की टीमों के बीच खेला गया, जिसमें कड़े मुकाबले के बाद रोहतक की टीम ने जम्मू-कश्मीर को हराकर स्पर्धा में अपनी पहली जीत दर्ज की।

खिलाड़ियों का किया स्वागत

इस मौके पर मुख्य अतिथि सिटी मजिस्ट्रेट नारनौल मंगल सेन तंवर ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल को हमेशा खेल की भावना से खेला चाहिए। खेल के मैदान में हार-जीत से ज्यादा महत्वपूर्ण खिलाड़ी का समर्पण और खेल के प्रति रुचि होती है। उन्होंने कहा कि नियमित खेल गतिविधियों से शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी होता है। तंवर ने सभी राज्यों से आए खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए उन्हें बधाई दी और आह्वान किया कि वह अपने खेल में उम्दा प्रदर्शन करें। तबकि भविष्य में वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ खिलाड़ी बनकर देश का नाम रोशन कर सकें। संस्था के अध्यक्ष कुबेर सिंह यादव ने आंगतुल्य मेहमानों का यह खिलाड़ियों का इस संस्था में पहुंचने पर बहुत-बहुत आभार प्रकट किया।



एसडी विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता

कनीना। गांव ककराला स्थित एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा तीसरी से लेकर कक्षा पांचवीं तक के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विद्यालय परिसर दिगंबर चली विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिता से उत्साह व उल्लास का माहौल बना रहा। विद्यालय के चेयरमैन जगदेव यादव व प्राचार्य ओमप्रकाश यादव ने बताया कि खिलाड़ियों ने दौड़, गेंद संतुलन, मेढ़क कूद तथा हर्डल रेस, बोरी रेस, रेस, बॉल बैलेंस रेस, बुक बैलेंस रेस में बह-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में टीम भावना, आत्मविश्वास और खेल भावना का विकास करना था। खेलों में बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। चेयरमैन जगदेव यादव, कोऑर्डिनेटर स्नेह यादव, प्रियंका यादव व बिन्दु ने विजेता खिलाड़ियों को का उत्साहवर्धन किया।

युवा शक्ति संगठन व राष्ट्र निर्माण में निभाएगी निर्णायक भूमिका डॉ. यतेंद्र

भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष का नमो कमल में स्वागत

हरिभूमि न्यूज़ ॥ नारनौल

नवनिर्वात भाजपा युवा मोर्चा हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष अश्वित दहिया के प्रथम जिला आगमन पर भाजपा जिला कार्यालय नमो कमल में भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव एवं युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष नरेंद्र यादव की अगुवाई में सैकड़ों युवाओं ने अभिनंदन किया। इस अवसर पर जिला कार्यालय में परिचय बैठक एवं युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष अश्वित दहिया ने कहा कि आज का



नारनौल। भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष अश्वित दहिया का स्वागत करते हुए।

युवा ही विकसित एवं सशक्त भारत का भविष्य है। महेंद्रगढ़ की युवा शक्ति ने शहादत, देश सेवा, खेल एवं समाजसेवा सहित हर क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

उन्होंने युवाओं से संगठन के साथ-साथ समाज और राष्ट्र को मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। इस दौरान जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव ने कहा कि

युवाओं का आभार व्यक्त किया

युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष नरेंद्र यादव ने भारी संख्या में कार्यक्रम में पहुंचे युवाओं का आभार व्यक्त किया। अश्वित दहिया ने जिला आगमन पर भाजपा युवा मोर्चा व भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रो. रामबिलास शर्मा व युवा मोर्चा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गोविंद मारडवाज के निवास पहुंचकर उपस्थित जनों से मेट की। इस मौके पर प्रदेश उपाध्यक्ष इंदुजीत यादव, जिला प्रभारी प्रदीप, मनीष उल्लास, रोहतक प्रभारी नवीन शर्मा, आईटी सहप्रभारी सिक्कंदर सैनी, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मनजोत यादव, आलोक शर्मा, गौरव यादव, दीपेंद्र आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अश्वित दहिया शिक्षित, ऊर्जावान एवं संगठन के प्रति समर्पित युवा हैं तथा दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व क्षमता का परिचय दे चुके हैं। उन्होंने युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष को आश्चर्य

किया कि जिला महेंद्रगढ़ की भाजपा एवं युवा शक्ति संगठन को मजबूत करने तथा अधिक से अधिक युवाओं को पार्टी एवं समाज की मुखंधारा से जोड़ने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करेंगी।

अनुबंधित विद्युत कर्मचारियों ने सौंपा ज्ञापन, 27 को पंचकूला में एसीएस कार्यालय घेरने का ऐलान

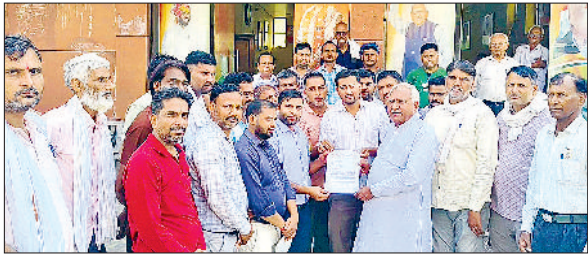
■ पात्र कर्मचारियों को शीघ्र नियुक्ति पत्र देने की मांग
लंबित मांगों पर कार्रवाई नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

अनुबंधित विद्युत कर्मचारी संघ के प्रदेशव्यापी आह्वान पर अनुबंधित कर्मचारियों की लंबित मांगों को लेकर शनिवार को विधायक ओमप्रकाश यादव को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। कर्मचारियों ने जॉब सिक्योरिटी, नियुक्ति पत्र जारी करने में देरी, सत्यापन प्रक्रिया

में आ रही समस्याओं तथा अन्य लंबित मांगों के समाधान की मांग उठाई। भारतीय मजदूर संघ के जिलाध्यक्ष आशीष गोरा की अध्यक्षता में संघ के पदाधिकारी व कर्मचारी विधायक से मिले। कर्मचारियों ने कहा कि बिजली निगम में लंबे समय से कार्यरत पात्र अनुबंधित कर्मचारियों को हरियाणा अनुबंधित कर्मचारी (सेवा सुरक्षा) अधिनियम का लाभ देते हुए शीघ्र नियुक्ति पत्र जारी किए जाएं।

संघ के जिलाध्यक्ष आशीष गोरा ने बताया कि मुख्यमंत्री की ओर से अनुबंधित कर्मचारियों को नियुक्ति पत्र देने के संबंध में कई बार



नारनौल। ज्ञापन सौंपते अनुबंधित विद्युत कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

आश्वासन दिया जा चुका है, लेकिन विभागीय स्तर पर सत्यापन और नियुक्ति पत्र जारी करने की प्रक्रिया अभी तक पूरी नहीं हुई है। उन्होंने बताया कि 30 जुलाई को चारों बिजली कंपनियों के प्रबंध निदेशकों

के साथ हुई बैठक में 14 अगस्त तक विभागाध्यक्ष स्तर पर सत्यापन प्रक्रिया पूरी करने और 15 अगस्त को पात्र कर्मचारियों को नियुक्ति पत्र जारी करने का आश्वासन दिया गया था। निर्धारित समय बीत जाने के

ये रहे मौजूद

ज्ञापन सौंपने वालों में कर्मवीर जाखड़, आशीष गोरा, चितामणि गुप्ता, उमेश जांगिड़, युनिट प्रधान रामौतार यादव, रोशनलाल, देवेंद्र यादव, कपिल यादव, अजीत, अनुप, प्रवीण, राजकुमार, छोटेलाल, दिनेश भार्गव, मनोज, बलवंत, अशोक, रामानंद, हेमंत, प्रदीप, झानौराम, कर्मवीर, सतपाल, महिपाल, वीरेंद्र, राणसिंह, सोनू आदि कर्मचारी शामिल रहे।

बावजूद नियुक्ति पत्र जारी नहीं होने से कर्मचारियों में रोष है।

संगठन की प्रमुख मांगें

जिला सचिव चितामणि गुप्ता ने कहा कि सरकार को आश्वासन के बजाय धरतल पर कार्रवाई करनी चाहिए। संगठन ने पात्र कर्मचारियों को सेवा सुरक्षा अधिनियम के तहत नियुक्ति पत्र जारी करने तथा 15 अगस्त 2024 से एरियर सहित वेतन लाभ देने की मांग की। इसके अलावा समान कार्य के लिए समान वेतन लागू करने, वर्ष 2021 से लंबित वेतन वृद्धि एरियर सहित देने, पांच वर्ष की सेवा पूरी कर चुके पात्र कर्मचारियों को सेवा सुरक्षा अधिनियम के दायरे में शामिल करने तथा एचपीजीसीएल सहित अन्य इकाइयों के पात्र कर्मचारियों को एचकेआरएन में शामिल करने की मांग की गई। संघ ने बिजली विभाग के जोखिमपूर्ण कार्य को देखते हुए सभी कर्मचारियों को जोखिम भरा, नियमित कर्मचारियों की तर्ज पर चिकित्सा पॉलिसी, मुक्त कर्मचारियों के आश्रितों को तीन माह के भीतर नौकरी तथा एचकेआरएन कर्मचारियों के वेतन स्लैब को अनुभव के आधार पर स्वतः अपग्रेड करने की मांग भी रखी।

27 अगस्त को पंचकूला में घेराव की चेतावनी

प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य कर्मवीर जाखड़ ने कहा कि यदि पात्र अनुबंधित कर्मचारियों की जांच एवं सत्यापन प्रक्रिया पूरी कर नियुक्ति पत्र जारी नहीं किए गए और लंबित मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया, तो 27 अगस्त को एसीएस (विद्युत) कार्यालय पंचकूला का घेराव कर विरोध-प्रदर्शन किया जाएगा। जिला कार्यकारी अध्यक्ष उमेश जांगिड़ ने कहा कि अनुबंधित कर्मचारी बिजली निगम की महत्वपूर्ण सेवाओं को जोखिम उठाकर पूरी निष्ठा से संचालित कर रहे हैं, लेकिन लंबे समय से उन्हें केवल आश्वासन मिल रहे हैं। सरकार को पात्र कर्मचारियों के भविष्य को सुरक्षित करते हुए तत्काल नियुक्ति पत्र जारी करने चाहिए। विधायक ओमप्रकाश यादव ने कर्मचारियों की समस्याओं को सुना और आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को सरकार के समक्ष प्रमुखता से उठाकर समाधान के लिए प्रयास किया जाएगा।

15 के बाद भी जारी है अतिरिक्त पानी की आपूर्ति, जोहड़-तालाब भरने के साथ भूजल रिचार्ज में होगा फायदा

नहरों में दौड़ रहा यमुना की बाढ़ का पानी, सूखे महेन्द्रगढ़ के लिए बना वरदान

कमजोर मानसून के बीच किसानों को राहत नांगल चौधरी जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्र में बढ़ेगा भूजल स्तर

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

सूखे और गिरते भूजल स्तर की मार झेल रहे महेन्द्रगढ़ जिले के लिए यमुना की बाढ़ का अतिरिक्त पानी वरदान सिद्ध हो रहा है। निर्धारित शेड्यूल के अनुसार 15 अगस्त तक जिले की नहरों में पानी आपूर्ति हो चुका था, लेकिन इसके बाद भी नहरें लगातार चल रही हैं। प्रदेश सरकार द्वारा पश्चिमी हरियाणा के यमुना क्षेत्र में बाढ़ के दौरान निकलने वाले अतिरिक्त पानी को महेन्द्रगढ़ जिले की नहरों में पहुंचाया जा रहा है। इससे एक ओर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पानी के उठराव और दलदल की समस्या कम हो रही है, वहीं दूसरी ओर सूखे महेन्द्रगढ़ में इस पानी का सदुपयोग जोहड़, तालाब भरने और भूजल रिचार्ज के लिए किया जा रहा है।

गौर हो कि यह जिला लंबे समय से पानी की गंभीर कमी से जूझ रहा है। कभी यहां खेती की मुख्य



नारनौल। पंप हाउस पर चलती नहर की मोटरें तथा नहर में चलता पानी।

निर्भरता कुओं पर हुआ करती थी, लेकिन लगातार भूजल दोहन और बारिश में कमी के कारण बड़ी संख्या में कुएं सूख चुके हैं। कुछ क्षेत्रों में ट्यूबवेल ही खेती का सहारा हैं, लेकिन उनसे भी सभी फसलों को पर्याप्त पानी नहीं मिल पाता। ऐसे में यमुना का अतिरिक्त पानी जिले के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। खासकर नांगल चौधरी जैसे सूखाग्रस्त और डार्क जोन वाले क्षेत्रों में इसका असर भू-जल स्तर पर भी देखने को मिला है। पिछले वर्षों में भी नहरों के माध्यम से पहुंचाए गए अतिरिक्त पानी से भू-जल स्तर में सुधार हुआ और कई सूखे कुओं में दोबारा पानी आने की स्थिति बनी।



फोटो : हरिभूमि

पीने के पानी के लिए नहर पर निर्भर रहता है नारनौल

नारनौल शहर की स्थिति भी पानी की कमी के मामले में गंभीर है। शहर के भूजल में खरापन अधिक होने के कारण यह पानी पीने योग्य नहीं है। कई स्थानों पर तो यह नहाने के लिए भी उपयुक्त नहीं माना जाता। ऐसे में नारनौल शहर की बड़ी आबादी पीने के पानी के लिए नहरी पानी पर निर्भर है। नहर से पानी की आपूर्ति में देरी होने या निर्धारित मात्रा से कम पानी मिलने पर एवं गर्मी सीजन में शहर में पेयजल संकट की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में जनस्वास्थ्य विभाग को राशनिंग के माध्यम से केवल पीने के पानी की आपूर्ति करनी पड़ती है। गर्मियों में इस तरह की स्थिति कई बार सामने आती है।

भूजल स्तर ऊपर उठाने में मदद मिलने की उम्मीद

इस बार मानसून कमजोर रहने के कारण खरोंफ की फसलों पर भी इसका असर पड़ा है। ऐसे में नहरों में 15 अगस्त के बाद भी पानी का लगातार आना किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयोगी माना जा रहा है। नहरों से पानी को आसपास के जोहड़ और तालाबों में पहुंचाया जा रहा है। इसके अलावा भू-जल रिचार्ज के लिए विभिन्न स्थानों, नदी-नालों और अन्य जल स्रोतों में भी पानी छोड़ा जा रहा है। इससे बारिश की कमी की कुछ भरपाई होने के साथ भविष्य में भूजल स्तर को ऊपर उठाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

अतिरिक्त पानी बना सहारा

मानसून सीजन में यमुना क्षेत्र में बाढ़ के दौरान बड़ी मात्रा में अतिरिक्त पानी उपलब्ध हो जाता है। इस पानी को वहीं रोककर रखने से कई स्थानों पर जलभराव और दलदल की स्थिति पैदा हो सकती है। ऐसे में अतिरिक्त पानी को नहरों के माध्यम से महेन्द्रगढ़ जैसे पानी की कमी वाले जिलों तक पहुंचाया जाता है। इससे बाढ़ के पानी का सदुपयोग भी हो जाता है और सूखे इलाकों को पानी भी मिल जाता है।

सीआईए ने नशा तस्कर युवक को किया गिरफ्तार

महेन्द्रगढ़। सीआईए टीम ने एक युवक को पांच ग्राम 98 मिलीग्राम हेरोइन (चिट्ठा) सहित गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक फैजल खान ने बताया कि सीआईए की टीम गश्त के दौरान बस अड्डा आदलपुर पर मौजूद थी। इसी दौरान पुलिस टीम को सूचना प्राप्त हुई कि आशीष नाम का युवक अवैध हेरोइन (चिट्ठा) लेकर आकांदा खेल स्टेडियम के सामने मौजूद है और उसे बेचने की फिराक में है। सूचना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीम ने तत्परता से रेडिंग पाटी का गठन किया और बताए गए स्थान पर पहुंचकर कार्रवाई की। पुलिस टीम को देखकर मौके पर मौजूद युवक ने भागने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए उसे काबू कर लिया। पूछताछ में युवक ने अपना नाम आशीष निवासी वार्ड नंबर-1 महेन्द्रगढ़ बताया। नियमानुसार राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में युवक की तलाशी ली गई।



मैस चोरी के मामले में कार्रवाई 24 घंटे में 3 आरोपित गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ►► महेन्द्रगढ़

जिले में चोरी एवं अन्य संपत्ति संबंधी अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत सीआईए महेन्द्रगढ़ ने मैस चोरी के मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए 24 घंटे के अंदर तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर चोरी की गई मैस व कटड़ी तथा वारदात में प्रयुक्त पिकअप गाड़ी बरामद की है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक फैजल खान ने बताया कि 20 अगस्त को रात्रि करीब 8 बजे गांव जेरपुर पाली वासी शिकायतकर्ता शिव कुमार ने सूचना दी कि 20 अगस्त को सुबह करीब तीन बजे उसकी मैस व कटड़ी चोरी हो गई। शिकायतकर्ता ने आसपास काफी तलाश की, लेकिन दोनों का कोई पता नहीं चल सका। इसके बाद उसने थाना सदर महेन्द्रगढ़ में शिकायत दर्ज करवाई। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल जांच शुरू की



और विभिन्न पहलुओं पर कार्रवाई करते हुए 24 घंटे के अंदर वारदात का खुलासा कर तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपितों के कब्जे से चोरी की गई एक मैस, एक कटड़ी तथा वारदात में प्रयुक्त एक पिकअप गाड़ी बरामद की। आरोपितों की पहचान सोनू निवासी पाली सदर महेन्द्रगढ़, भीम सिंह निवासी पाली, सदर महेन्द्रगढ़, रिजवान निवासी घोड़ली, जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है।

आर्य महिला महाकुम्भ नारी जागरण 30 को

नारनौल। भारतीय वैदिक महासंघ ने तत्वावधान में आर्य महिला महाकुंभ नारी जागरण एवं महिला सम्मान समारोह 30 अगस्त को होगा। यह समारोह महेन्द्रगढ़ रोड स्थित गणपति गार्डन में आयोजित किया जाएगा। इसमें डा. यशदेव शास्त्री खटौटी कला की पत्नी एवं आचार्यकुलम हरिद्वार की वाइस चेयरपर्सन डा. ऋतम्भरा मुख्य अतिथि होंगी। अध्यक्षता जिला पार्षद उर्मिला देवी सलीमपुर करेंगी। इस संबंध में आयोजक अध्यक्ष कलावती आचार्या ने बताया कि 30 अगस्त को सुबह आठ से नौ बजे तक अग्निहोत्र यज्ञ होगा। इसके बाद सुबह नौ बजे से दोपहर दो बजे तक भजन, प्रवचन व सम्मान कार्यक्रम रहेगा। इस समारोह में विधायक ओमप्रकाश यादव, विधायक कंवरसिंह यादव, भाजपा जिला उपाध्यक्ष वासुदेव यादव, पूर्व सरपंच कुलदीप यादव को बचौडिया विशिष्ट अतिथि होंगे। सम्मानित अतिथि के तौर पर सुबेदार कमल सिंह मांवल बहरोड़, संतरा देवी नसीबपुर, कुबेर सिंह आरएनआर स्कूल व डा. स्नेहलता मौजूद रहेंगे।



महेन्द्रगढ़। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में जिला स्तरीय ग्रुप डांस एवं रोल प्ले प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम में जिले के सभी पांच ब्लॉक से ब्लॉक स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीमों ने भाग लिया। आईएफआईसी ईंचार्ज डॉ. ईश्वर शर्मा ने कहा कि हरियाणवी संस्कृति हमारी पहचान और हमारी विरासत है। ग्रुप डांस एवं रोल प्ले जैसी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी संस्कृति, परंपराओं और संस्कारों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम में रोल प्ले में आरोही

मॉडल संस्कृति स्कूल ने प्रथम स्थान तथा ग्रुप डांस में गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल नारनौल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ग्रुप डांस में तृतीय पोजीशन पर क्रमशः गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल एवं पीएम श्री सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेन्द्रगढ़ की टीम रही एवं रोल प्ले में द्वितीय एवं तृतीय पोजीशन पर क्रमशः गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल एवं गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल गुजरवास की टीम रही विजेता टीमों को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं।

बवानिया में लिंग अनुपात सुधार को लेकर जागरूकता बैठक

महेन्द्रगढ़। गांव बवानिया में घटते लिंग अनुपात को लेकर जागरूक विभाग ने अनूठी पहल की। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत शुक्रवार को गांव में एक विशेष जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक पीएचसी धनौन्दा के ईंचार्ज डॉ. प्रतीक के मार्गदर्शन में आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मोनिका ने की, जबकि मंच संचालन स्वास्थ्य कर्मी ज्ञानचंद आर्य ने किया। डॉ. मोनिका ने कहा कि बवानिया गांव का लिंग अनुपात चिंताजनक रूप से कम है। उन्होंने कहा कि सभी गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण 10 सप्ताह के भीतर अनिवार्य रूप से कराएं, बेटी के जन्म पर जन्म मनाएं और मिठाइयां बांटें, बेटियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाकर आत्मनिर्भर बनाएं, बेटा-बेटी में भेदभाव खत्म करें, क्योंकि बेटियाँ एक नहीं, दो परिवारों का मान बढ़ाती हैं। कार्यक्रम के अंत में मौजूद सभी ग्रामीणों और स्वास्थ्य कर्मियों ने बेटियों की रक्षा, शिक्षा और सम्मान की सामूहिक शपथ ली। इस अवसर पर स्वास्थ कर्मी ज्ञानचंद, महिला स्वास्थ्य कर्मी अनीता देवी, आशा वर्कर सरोज, मनीषा, सुमन, मेनका और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पूनम सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएं उपस्थित रहे।



वाल्मीकि समा के नए आजीवन सदस्य बनने के लिए करें आवेदन

नारनौल। श्री महर्षि वाल्मीकि समा के नए आजीव सदस्यों के लिए वोट हरियाणा सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 2012 के अनुसार बनाए जाने हैं। ऐसे में समाज से जुड़े हरचुक व्यक्ति 25 अगस्त से 25 सितम्बर तक सुबह 10 से दोपहर एक बजे और शाम चार से सात बजे तक तालाब बहादुरसिंह मार्ग स्थित वाल्मीकि समा भवन में फार्म जमा करवा सकते हैं। समा प्रधान जोगेंद्र सिंह ने बताया कि नए वोट का फार्म के लिए नियम हैं। इनमें प्रार्थी वाल्मीकि समाज नारनौल का रणार्ड निवासी होना चाहिए। वोट बनवाने के लिए प्रार्थी की आयु 21 वर्ष होनी चाहिए। प्रार्थी का आजीवन शुल्क 1100 रुपये है जो बैंक के द्वारा डीडी या चैक के द्वारा जमा करवाना अनिवार्य है। प्रार्थी को आधार कार्ड, दो पासपोर्ट साइज फोटो व आयु का प्रमाण पत्र जमा करवाना होगा।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या WhatsApp करें :-

महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड़ा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेन्द्रगढ़।

नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरुण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल

फ़ोन :- 8295738500, 9253681005

योजना कक्षा छह से 12वीं तक के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच व नवाचार को मिलेगा बढ़ावा

इंस्पायर अवार्ड मानक के लिए विद्यार्थियों के आइडिया होंगे आमंत्रित, 31 अगस्त तक ऑनलाइन नामांकन

हरिभूमि न्यूज ►► नारनौल

इंस्पायर अवार्ड मानक योजना 2026-27 के तहत कक्षा 6 से 12वीं तक के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है। जिला शिक्षा अधिकारी, नारनौल ने जिले के सभी सरकारी एवं निजी वरिष्ठ माध्यमिक, उच्च एवं माध्यमिक विद्यालयों को विद्यार्थियों के आइडिया आइडिया ऑनलाइन नामांकित करवाने के निर्देश दिए हैं। जिला शिक्षा अधिकारी की ओर से जारी पत्र के अनुसार राज्य शैक्षिक

विद्यार्थियों के अधिकाधिक आइडिया ऑनलाइन नामांकित करवाने के लिए निर्देश

अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद गुरुग्राम के निर्देशों के तहत इंस्पायर अवार्ड मानक योजना 2026-27 के लिए ऑनलाइन नामांकन प्रारंभ है। भारत सरकार के अविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की इस योजना के अंतर्गत कक्षा छह से 12वीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं तथा प्रत्येक विद्यालय से पांच सर्वश्रेष्ठ एवं अभिनव विचारों का नामांकन किया जा सकता है। नामांकन ऑनलाइन माध्यम से इंस्पायर अवार्ड के पोर्टल पर विद्यालय की लॉगिन आईडी एवं पासवर्ड के माध्यम से किया जाएगा।

स्कूलों में हो चुकी आइडिया प्रतियोगिता

विद्यालय में 16 से 25 जुलाई के बीच आइडिया प्रतियोगिता आयोजित कर कक्षा छह से 12वीं तक पढ़ने वाले विद्यार्थियों को विचार एकत्रित किए जा चुके हैं। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत विचारों को निर्धारित समय सीमा तक एक आइडिया बॉक्स में सुरक्षित रखा जाएगा। प्राप्त आइडिया में से विद्यार्थियों के सर्वश्रेष्ठ पांच आइडिया का चयन कर उनका ऑनलाइन नामांकन किया जाएगा। निर्देशों के अनुसार विद्यालयों में आइडिया बॉक्स स्थापित करना अनिवार्य किया गया है। विद्यालय प्रमुखों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी सरकारी एवं निजी विद्यालयों में यह प्रक्रिया प्रभावी ढंग से लागू हो।

विद्यालय की लॉगिन आईडी का होगा उपयोग

जिले के सभी सरकारी एवं निजी वरिष्ठ माध्यमिक, उच्च एवं माध्यमिक विद्यालयों से सर्वश्रेष्ठ विचारों का ऑनलाइन मोड के माध्यम से 31 अगस्त तक इंस्पायर अवार्ड मानक योजना की वेबसाइट पर नामांकन किया जाना है। इसके लिए विद्यालय की लॉगिन आईडी एवं पासवर्ड का उपयोग किया जाएगा। जिला के सभी खंड शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने अधिकार क्षेत्र के सभी विद्यालयों में आइडिया बॉक्स की व्यवस्था सुनिश्चित करवाएं और विद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता तथा ऑनलाइन नामांकन की नियमित निगरानी करें।

सिहमा में जन्माष्टमी मेले का आगाज चार सितंबर से

मंडी अटेली। बाबा खेतानाथ की जन्मस्थली सिहमा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का दो दिवसीय मेला चार सितंबर से शुरू हो रहा है। इस मेले में विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं होंगी। मेले की शुरूआत बाबा खेतानाथ मंदिर के महंत ऐतवार नाथ के हाथों से रिबन काटकर किया जाएगा। मेला कमेटी व सरपंच प्रतिनिधि प्रमोद यादव ने बताया कि मेले में कुशितयां 50 रुपये से लेकर 21 हजार रुपये तक करवाई जाएंगी। मेले में वालीबाल, पुरुष प्रतियोगिता में प्रथम विजेता टीम को 51 हजार व द्वितीय को 41 हजार तथा वॉलीबॉल महिला समैसिंग प्रतियोगिता में प्रथम को 35 हजार, द्वितीय को 25 हजार रुपये, तृतीय को 15 हजार एवं चौथे स्थान पर रहने वाली टीम को 11 हजार रुपये दिए जाएंगे।

आपसी संवाद का बदलता मिजाज खो ना जाए रिश्तों की मिठास



कवर स्टोरी
रशीधरा भटनागर

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, मनुष्य के भीतर से दूसरे मनुष्य तक जाने वाली वह महीन डोर है, जिसमें समय, संस्कार, स्मृतियाँ और संबंध एक साथ बंधे रहते हैं। किसी समाज की भाषा को सुनकर उसके समय की धड़कन पहचानी जा सकती है। शब्द बदलते हैं तो केवल शब्द नहीं बदलते, उनके साथ हमारे व्यवहार, हमारी निकटताएँ और कभी-कभी हमारी संवेदनाएँ भी अपना रूप बदल लेती हैं।

भाषा में होता था माधुर्य

एक समय था, जब मोहल्ला एक परिवार जैसा होता था और मोहल्ले की अपनी एक लोकभाषा हुआ करती थी। वह किसी व्याकरण की पुस्तक में नहीं मिलती थी, फिर भी उसमें जीवन का पूरा व्याकरण समाया होता था। पड़ोस की चाची, गली के काका, सामने वाले घर की दादी, दूध वाले भैया, डाकिया चाचा। रक्त-संबंध न होते हुए भी भाषा ने सबको रिश्तों में बांध रखा था। किसी के घर से पकवान निकला तो कटोरी पड़ोस में पहुँची। किसी के यहां कोई दुःख-परेशानी आई तो अगले बरताने से आवाज आती, 'कुछ चाहिए तो बताना।' किसी बुजुर्ग को देखते ही बच्चे का स्वर अपने आप नीचे हो जाता था। 'आप', 'आइए', 'बैठिए', 'खाइए', 'कैसे हैं?... ' ये केवल शब्द नहीं बल्कि बुझने के अस्तित्व को स्वीकार करने के संस्कार हुआ करते थे। मोहल्ले की उस भाषा में एक सहज माधुर्य था। उसमें आत्मीयता थी, पर आत्मीयता की भी एक मर्यादा थी। मजाक था, मगर अपमान नहीं। असहमति थी,

मगर संबोधन में सम्मान बचा रहता था। आज मोहल्ले सिकुड़कर अपार्टमेंट हो गए हैं और चौपाल स्क्रीन पर चली गई है। पड़ोसी का चेहरा कई बार वर्षों तक दिखाई नहीं देता, जबकि दूर देश में रहने वाला कोई डिजिटल मित्र प्रतिदिन बातचीत का हिस्सा बना रहता है। भाषा भी उसी के साथ बदल गई है।

नई पीढ़ी की बेलाग भाषा

आज जब हम नई पीढ़ी की भाषा की बात करते हैं, तो चर्चा केवल 'हाय', 'हेलो' 'ओके', 'कूल' 'ब्रो' या डिजिटल संक्षिप्तियों तक सीमित नहीं रह सकती है। इस भाषा का एक दूसरा, अधिक चिंताजनक पक्ष है बातचीत में बढ़ती बेलाग अशिष्टता, गाली-गलौज और अपशब्दों का सहज इस्तेमाल।

लेकिन इसे केवल 'आज के बच्चों के संस्कार खराब हैं' कहकर समझ लेना समस्या को बहुत छोटा कर देना होगा। आज युवाओं की



बातचीत में अपशब्दों का इस्तेमाल कई संदर्भों में सामान्य होता दिखाई देता है। शोध यह संकेत देते हैं कि युवाओं में अपशब्दों का प्रयोग केवल 'असंस्कारी' होने का परिणाम नहीं होता। कभी यह भावनाओं को तीव्रता से व्यक्त करने, कभी समूह में स्वीकार्यता पाने और कभी अपनी बात

घर-परिवार हो, पड़ोसी, मित्र-मंडली, सहकर्मी हों या रिश्तेदार, सभी से संबंध, हमारे बातचीत के तरीके और शब्दों पर निर्भर करते हैं। समय के साथ शब्द, संबोधन, भाषा की चाल बदलना स्वाभाविक है, लेकिन भाषा से यदि सम्मान और मर्यादा का भाव कम होने लगे तो रिश्तों की ऊष्मा, उसकी मिठास खोने का डर मंडराने लगता है। ऐसे में हम सभी को सजग होने की जरूरत है।



को अधिक प्रभावशाली बनाने का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी बात खुलकर रखने के बहुत अधिक अवसर दिए हैं और इसके साथ अशिष्ट भाषा की दुर्यता भी बढ़ी है। यानी समस्या केवल शब्दों की नहीं, शब्दों के सामान्य हो जाने की है। दरअसल, जब किसी शब्द को बार-बार सुना जाता है, तो उसका चौंकाने वाला प्रभाव कम होने लगता है। जो कल असभ्य माना जाता था, वह आज मजाक का हिस्सा बन जाता है। और जो मजाक में कहा गया था, वह धीरे-धीरे रोजमर्रा की भाषा में प्रवेश कर जाता है।

समझना होगा महत्वपूर्ण अंतर

हर अपशब्द हिंसा नहीं है और हर अपशब्द किसी व्यक्ति को अपमानित करने के लिए नहीं बोला जाता। भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि लोग कभी-कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भावनात्मक तीव्रता, तनाव या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए करते हैं। लेकिन किसी की



गरिमा को चोट पहुंचाने वाली गाली और मित्रों के बीच भावनात्मक विस्मय व्यक्त करने वाला अपशब्द एक ही बात नहीं हैं। यहीं भाषा की नैतिकता का प्रश्न खड़ा होता है। आखिर यह भाषा आई कहां से? इस बदलाव के पीछे कई परतें हैं।

डिजिटल दुनिया: सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, छोटे वीडियो और मीम संस्कृति में तीखी, उत्तेजक और चौंकाने वाली भाषा अकसर मनोरंजन का हिस्सा बन जाती है।

साधियों का प्रभाव: किशोरावस्था में समूह से जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोई शब्द मित्र-मंडली में सामान्य है तो उसे न बोलना कई बार 'अलग' दिखाई देना हो सकता है। इसलिए युवा भाषा केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

घर की भाषा: हम अकसर बच्चों की भाषा पर अंगुली उठाते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाषा सीखने की पहली पाठशाला घर है। यदि घर में क्रोध का पहला उतर गाली है, तो बच्चे के लिए गाली केवल निषिद्ध नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

ध्यान रखने की प्रवृत्ति: बेलाग भाषा कई बार 'कूल', 'बोल्ड' या 'बेबाक' दिखने का माध्यम बन जाती है। इसीलिए कुछ युवा जान-बूझकर ऐसी भाषा चुनते हैं। **संवाद का घटता धैर्य:** जब बातचीत छोटी होती जाती है, तो भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों की जगह तीव्र शब्द लेने लगते हैं। इन सभी कारणों को समझने के बाद विकृत होती भाषा के लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि भाषा का यह परिवर्तन केवल युवाओं ने पैदा नहीं किया है। उन्हें यह भाषा समाज ने दी है।

भाषा में बनी रहे मधुरता-मर्यादा

हमें पुरानी भाषा को हूबहू वापस लाने की आवश्यकता नहीं है। नई पीढ़ी को अपनी भाषा होगी ही। जरूरत केवल इतनी है कि आधुनिकता के साथ माधुर्य भी रहे और बेबाकी के साथ मर्यादा भी। प्रश्न शब्द का नहीं, उसके पीछे मौजूद मन का है। हम न भूलें कि शब्दों में अद्भुत शक्ति होती है। वे रिश्तों में मिठास घोल सकते हैं तो हमेशा के लिए खटास भी भर सकते हैं। *

मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाएं भाई-बहन का भावनात्मक संबल

हर परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अनोखा और प्यारा होता है। उम्र के हर दौर में भाई-बहन का एक-दूसरे को दिया जाने वाला भावनात्मक संबल, मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। इस बारे में आप विस्तार से जरूर जानना चाहेंगे।

पॉजिटिव इफेक्ट नैसी गुप्ता

बदलती जीवनशैली, बढ़ता काम का दबाव, सोशल मीडिया की तुलना और अकेलेपन की भावना आज मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण बन चुके हैं। ऐसे समय में परिवार का भावनात्मक सहयोग, हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत साबित होता है। परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अलग और प्यारा होता है, क्योंकि यह केवल बचपन की यादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर भावनात्मक सुरक्षा, भरोसा और अपनापन भी देता है। भाई-बहन का रिश्ता दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भावनात्मक सुरक्षा: बचपन के बाद टीनएज, यंगएज और मिडएज में भाई-बहन दोस्त जैसे हो जाते हैं, जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं साझा कर लेते हैं। जब जीवन में तनाव, असफलता या किसी तरह की परेशानी आती है, तो भरोसेमंद भाई या बहन का साथ मानसिक बोझ को काफी हद तक कम कर देता है। यह भावनात्मक सुरक्षा, चिंता और अकेलेपन की भावना को घटाने में मदद करती है।

तनाव होता है कम: मानसिक तनाव के दौरान किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना काफी राहत देता है। भाई-बहन एक-दूसरे की परिस्थितियों, स्वभाव और पारिवारिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए वे बिना जज किए सुनते हैं और व्यावहारिक सलाह भी देते हैं। यह सहयोग तनाव से बाहर निकलने में सहायक हो सकता है। **अकेलापन महसूस हो कम:** आज के समय में अनेक युवक-युवतियां, परिवार से दूर रहकर पढ़ाई



या नौकरी करते हैं। ऐसे में अकेलेपन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में यदि भाई-बहन के साथ नियमित बातचीत होती रहे, तो दूरी के बावजूद भावनात्मक जुड़ाव कायम रहता है। फोन कॉल, वीडियो कॉल या संदेश भी मानसिक सुकून देने का काम करते हैं। **बढ़ता है आत्मविश्वास:** हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे पल आते हैं जब उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। ऐसे समय में भाई या बहन का प्रोत्साहन आत्मविश्वास को दोबारा मजबूत कर सकता है। बचपन से एक-दूसरे की खूबियाँ और कमजोरियों को जानने के कारण, उनका उत्साहवर्धन अधिक प्रभावी महसूस होता है।

कठिन समय में सहारा: मानसिक स्वास्थ्य केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है। बीमारी, आर्थिक परेशानी या पारिवारिक संकट के समय भाई-बहन, भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ व्यावहारिक

मदद भी करते हैं। जिम्मेदारियां बांटना, निर्णय लेने में साथ देना और समस्याओं का समाधान ढूंढना मानसिक दबाव को कम करने में मदद करता है। **मिलती है सकारात्मक ऊर्जा:** बचपन की सुखद यादें मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। भाई-बहन के साथ बिताए गए खेल, त्योहार, शरारतें और पारिवारिक अनुभव कठिन समय में भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस कराते हैं। कहा जा सकता है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाला भावनात्मक सहारा भी है। बदलते समय में जब मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं, तब यह रिश्ता हमें अपनापन और आत्मविश्वास देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। * (क्लिनिकल साइकोलाजिस्ट निर्मल वर्मा से बातचीत पर आधारित)

रिश्ता बनाए रखें मजबूत

भाई-बहन के बीच केवल रिश्ता होना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि मजबूती बनाए रखने के लिए उसे समय देना भी जरूरी है। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नियमित बातचीत करें, एक-दूसरे की उपलब्धियों की सराहना करें, मतभेद होने पर संवाद बनाए रखें और छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक मन में न रखें। स्वस्थ संवाद रिश्ते को मजबूत बनाता है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। इसके साथ ही रक्षाबंधन, जन्मदिन या परिवार के छोटे-छोटे समारोह, भाई-बहन को फिर से करीब लाने का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों को मिस न करें। इस दौरान साथ समय बिताना, पुरानी यादें साझा करना, उत्साह के पल बिताना और एक-दूसरे का हाल-चाल जानना भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है। कई परिवारों में भाई-बहनों के बीच तुलना की जाती है, जिससे तनाव, ईर्ष्या और आत्मसमझन से जुड़ी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इसके बजाय एक-दूसरे की सफलता का सम्मान करना और शुभिकल समय में सहयोग देना रिश्ते को अधिक सकारात्मक बनाता है। भाई-बहन के बीच रखे संबंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा लाभदायक होते हैं।



गजल
ओम निश्चल

राखी आ गई

फिर उमड़ आई बरन की याद राखी आ गई
फिर से पकवानों में आया स्वाद राखी आ गई

थाल में कुमकुम और रोली सज गई
हृदय में उठ रहा है आह्लाद राखी आ गई

गुनगुनाने-सा लगा है फिर ये घर
फिर हुआ है नायक आबाद राखी आ गई

चैनलों पर गीत गाए जा रहे
छंट गया है जेलन से श्रवसाद राखी आ गई

बंध गई हैं राखियां फिर हाथ में
बरन-भाई कर रहे संवाद राखी आ गई

एक धागे में जो चाहे बांध लो
भाईघारे का यही मरजाद राखी आ गई

लघुकथाएं

शदी के कुछ दिन बाद ही विदेश जा बसी बहू ने, सुबह-सुबह फोन की घंटी बजते ही अनमने मन से अपनी सास का कॉल रिसीव किया, बोली, 'प्रणाम मां जी, कैसी हैं आप?' सासू मां बोलीं, 'अरे बहू, रक्षाबंधन पर अपने भाई की राखी भेजना मत भूलना। शदी के बाद पहली राखी है, तुम्हारे घर पर सब इंतजार करेगे।' 'जी मां जी, भेज दूंगी, आप चिंता ना करें।' उसने सधी-सपाट आवाज में जवाब दिया और फोन रखते ही सोचने लगी, 'फोन, चैट, वाट्सएप सब तो चलता ही रहता है, मैं कौन-सी भाई से साल में एक बार मिलती हूं? इस साल ही तो दूर आई हूं। राखी भेजने की औपचारिकता करना ही क्या जरूरी है?' बाद में वह घर-ऑफिस के कामों में ऐसा उलझी कि यह भूल ही गई रक्षाबंधन है कब? रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह भाई ने अपनी कलाई पर सजी सुंदर राखी की फोटो भेजी और एक प्यारा-सा संदेश भी। 'कितना खुश हूं मैं कि वहां जाकर भी तुम्हें राखी का त्योहार याद रहा, अपने भाई के लिए स्नेह की डोर भेजना न भूलो। देख तो दूर रहकर भी हमारे बीच कभी दूरियां नहीं आएंगी। यह रेशमी धागा हमें हमेशा बांधे रखेगा।' फिर फोन पर बात हुई तो भाई-बहन दोनों का गला रंध गया। आंखों में नमी लिए खुशी से कांपते हाथों से उसने सासू मां को फोन लगाया तो उन्होंने

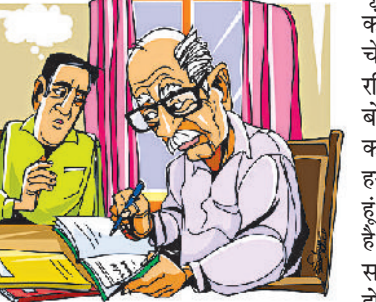
वृद्धाश्रम में रहने वाले एक बुजुर्ग रोज सुबह सबसे पहले वहां का उपस्थिति रजिस्टर खोलते और कांपते हाथों से अपने नाम के सामने हस्ताक्षर करते थे। एक दिन वहां मौजूद एक स्वयंसेवक ने उत्सुकता से पूछा, 'अंकलजी, यहां तो कोई रोज जांच भी नहीं करता, फिर आप हर दिन रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों करते हैं?' बुजुर्ग हल्का-सा मुस्कुराए और बोले, 'आदत है बेटा बरसों पुरानी आदत।' कुछ पल चुप रहने के बाद उनकी आंखें कहीं दूर टिक गईं, फिर धीमे स्वर में बोले, 'पूरी जिंदगी बैंक के कागजों पर, जमीन के दस्तावेजों पर, मकान के रजिस्ट्री पेपर्स पर, न जाने कितनी बार हस्ताक्षर करता प्रा। हर हस्ताक्षर किसी न किसी जिम्मेदारी या अधिकार का प्रतीक था। लेकिन जिस दिन आखिरी

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

—कृति आर.के. जैन

कच्ची डोर

मकान भी बेटे के नाम कर दिया, उसी दिन मेरे नाम का कमरा बदल गया और मैं इस वृद्धाश्रम में आ गया।' स्वयंसेवक के पास कोई शब्द नहीं बचे। वह केवल बुजुर्ग के चेहरे को देखता रह गया। बुजुर्ग ने धीरे से रजिस्टर बंद किया, गहरी सांस ली और बोले, 'अब यहां रोज इसलिए हस्ताक्षर करता हूं, ताकि कम से कम एक जगह तो हर दिन यह दर्ज होता रहे कि मैं अभी जिंदा हूं, मेरा अस्तित्व अभी पूरी तरह मिटा नहीं है।' यह सुनते ही रजिस्टर का वह साधारण-सा पन्ना अचानक बहुत भारी हो गया। उस दिन स्वयंसेवक ने पहली बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

—कृति आर.के. जैन

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

करुणा की शक्ति

वर्तमान समय का सबसे ज्वलंत सवाल यह है कि युद्ध, हिंसा, गैरबराबरी, अन्याय, शोषण जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान क्या हो सकता है? इस सवाल का मुकम्मल जवाब है नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी की किताब 'करुणा-समाधान की शक्ति।' आज हमारी सभ्यता जितनी तेजी से विकास के नए आयाम गढ़ रही है, उतनी ही तेजी से चुनौतियों के दलदल में फंसती भी जा रही है। मनुष्य तकनीकी रूप से जितना सक्षम हो रहा है, सामाजिक रूप से उतना ही विपन्न भी होता जा रहा है। यहाँ तक कि अपने आप से भी उसका संबंध



समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

—कृति आर.के. जैन

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

—कृति आर.के. जैन

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ मंशरूम पाउडर

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability at: www.mynushroomworld.com
Amazon | Flipkart

वज़न बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियाँ

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वज़न है, तो वज़नवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry + 91 888 922 3333

धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव

केरल का बहुरंगी महापर्व ओणम

फूलों की रंगोलियों से सजे आंगन, सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, लोकनृत्यों की थिरकन और केले के पते पर परोसा गया ओणसदा। ओणम में केरल की संस्कृति अपने सबसे जीवंत रूप में नजर आती है। राजा बलि की पौराणिक गाथा से जुड़ा यह पर्व आस्था, प्रकृति से जुड़ाव, परंपरा, सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का अद्भुत संगम है। विगत सप्ताह आरंभ हो चुके इस सांस्कृतिक उत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

पर्वाँल्लास / धीरज बसाक

यदि उत्तर भारत में होली, रंगों का उत्सव है, पश्चिम भारत में गुजरात का नवरात्र लोकनृत्यों का उत्सव है और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा आस्था का विराट आयोजन है, तो कह सकते हैं

इन सभी रंगों और उत्सवों के महासंगम जैसा है-ओणम। दस दिनों तक मनाए जाने वाले इस पर्व के दौरान पूरा केरल मानो एक विशाल सांस्कृतिक रंगमंच में बदल जाता है- जहां फूलों की रंगोलियां (पुक्कलम), सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, कथकली और पुलिकली जैसे लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत, सामूहिक भोज (ओणसदा) तथा महाबलि की लोकगाथा, ये सब मिलकर एक अद्भुत उत्सवी वातावरण रचते हैं। दस दिनों तक मनाए जाने वाले ओणम का अंतिम उत्सव दिन इस साल 26 अगस्त को संपन्न होगा।

भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान: ओणम केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह केरल की लोककला, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महा उत्सव भी है। शायद यही कारण है कि ओणम आज केरल की सीमाओं से निकलकर भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान का हिस्सा हो चुका है, जहां उत्सव केवल मनाया नहीं जाता बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

पर्व मनाने की पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार एक समय में केरल में राजा महाबलि का शासन हुआ करता था। महाबलि बेहद न्यायप्रिय, दयालु और प्रजावत्सल शासक थे। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई गरीब नहीं था। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता था और सभी लोग सुखी थे। देवताओं के आग्रह पर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर महाबलि की दयालुता और दानवीरता की परीक्षा लेने



पारंपरिक वेशभूषा में ओणम मनाते स्थानीय कलाकार

हेतु तीन पग भूमि मांगी। जब महाबलि ने कहा आप नाप लें, तो वामन के अवतार में भगवान विष्णु ने दो पगों में पृथ्वी और आकाश को नाप लिया और अब तीसरे पग के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी, तो महाबलि ने अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। इस पर भगवान विष्णु ने बलि की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आया करेंगे। वास्तव में ओणम का उत्सव उनके आगमन की खुशी का उत्सव है। यह पौराणिक कथा केवल धार्मिक आस्था की नहीं बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था, समानता, न्यायप्रियता, त्याग और जनकल्याण का संदेश देती है।

हर दिन होता है कुछ खास: ओणम की शुरुआत में सबसे पहले घरों के आंगन में फूलों की



ओणम की सांस्कृतिक पहचान है सर्प नौका दौड़

रंगोलियां बनाई जाती हैं। प्रत्येक दिन रंग-बिरंगे फूलों से सजने वाली यह रंगोली प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्यबोध का प्रतीक है। फूलों की इन रंगोलियों को यहां की स्थानीय भाषा में पुक्कलम कहा जाता है। ओणम के दौरान पारंपरिक नृत्य तिरुवातिराकली, कुम्माट्टिकली, पुलिकली (बाघ नृत्य) और कथकली की प्रस्तुतियां पूरे राज्य में आकर्षण का केंद्र बनती हैं। लोकगीतों की मधुर धुनों और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज से इस दौरान केरल के गांव और शहर झूम उठते हैं। इसी समय होने वाली केरल की प्रसिद्ध वल्लमकली (सर्प नौका दौड़) तो विश्व भर में ओणम की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है। इन लंबी-लंबी नौकाओं के अगले सिरे सांप के फन जैसे होते हैं। इनमें सैकड़ों नाविक एक साथ पूरे तालमेल

के साथ चप्पू चलाते हैं। यह केवल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि सामूहिकता, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन है।

धार्मिक-सामाजिक समभाव का पर्व: ओणम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक धर्म या एक समुदाय का पर्व नहीं है। केरल में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग भी इसे पूरे सम्मान और उत्साह से मनाते हैं। ओणम का महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष यह है कि यह वर्ग, जाति और धर्म की सीमाओं को पीछे छोड़कर लोगों को एक सूत्र में बांधता है। दस दिनों के इस उत्सव में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और सामूहिक भोज का आनंद उठाते हैं। यही कारण है कि ओणम को सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का भी महापर्व कहा जाता है।

सबके साथ ओणसदा का आनंद: ओणम का जिक्र ओणसदा के बिना अधूरा है। केले के पते पर परोसा जाने वाला यह पारंपरिक भोज केवल भोजन नहीं है, यह केरल की पाक संस्कृति का भी उत्सव है। इसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, सांभर, अलियल, ओणम, थोरण, अचार, पापड़ और अंत में पायसम परोसा जाता है। इस भोजन की विशेषता यह होती है कि इसमें स्वाद के साथ संतुलित पोषण और सामूहिक भोजन की भावना भी शामिल होती है। परिवार व मित्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

कृषि-प्रकृति से संबंध का प्रतीक: ओणम चूँकि वर्षा ऋतु के बाद अच्छी फसल आने की

खुशी का पर्व है, इसलिए इसका गहरा संबंध कृषि और प्रकृति से भी है। इस पर्व में की जाने वाली फूलों की सजावट, हरियाली, नई फसल और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान इस पर्व की प्रमुख विशेषता है। आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया की चिंता बन चुका है, तब ओणम हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। *

एक सवाल हम सभी को अकसर परेशान करता है कि अगर हम आगे बढ़ना चाहते हैं, प्रगति के साथ सकारात्मक बदलाव करना चाहते हैं तो फिर अपनी जिंदगी में मनचाहा बदलाव क्यों नहीं ला पाते हैं? इसका जवाब हमें ठहरकर अपने भीतर ही खोजना होगा।



आप अपनी जिंदगी में क्यों नहीं बढ़ पा रहे आगे

सेल्फ मोटिवेशन
जोगिंदर रोहिल्ला

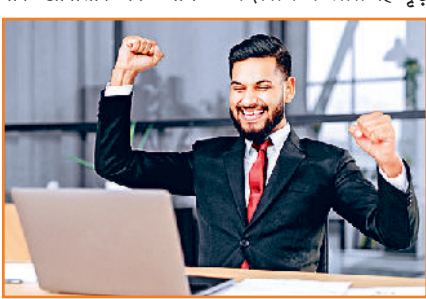
हम में बहुत से लोग गोल डिसाइड करते हैं। प्लान बनाते हैं। मोटिवेशन की किताबें पढ़ते हैं। अफमेशन करते हैं और अपने भविष्य को विजुअलाइज भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों हम वो अचीव नहीं कर पाते हैं। तब अकसर हम दूसरे लोगों को, भाग्य को और परिस्थितियों को दोष देना शुरू करते हैं। सवाल है आखिर हमें आगे बढ़ने से रोकता क्या है?

सोच को रखें पॉजिटिव: डॉ. जो डिस्पेंजा की किताब 'बीकमिंग सुपरनेचुरल' इस बारे में जिंदगी को थोड़ा अलग नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है। इसमें व्यक्त किया गया एक विचार खासतौर पर ध्यान खींचता है। इसके अनुसार, हमारे विचार और हमारी भावनाएं (इमोशन) हमारे शरीर से गहराई से जुड़ी हुई होती हैं। विचार, भावना को प्रभावित करता है। भावना फिर विचार को प्रभावित करती है। और यह चक्र चलता रहता है। बार-बार ऐसा होने पर यह हमारे लिए जाना-पहचाना बन जाता है। हमारा दिमाग उस पैटर्न को पहचानने लगता है और हम बिना सोचे उसी तरह प्रतिक्रिया देने लगते हैं। वही डर, वही चिंता, वही प्रस्ट्रेशन और वही आत्म-संदेह। वास्तव में हम अपनी जिंदगी को सचेत होकर नहीं जी रहे होते हैं। हम सिर्फ वही दोहरा रहे होते हैं, जो हमारे लिए जाना-पहचाना बन चुका है। इसी विचार को दूसरी कुछ किताबें भी अलग-अलग तरीके से सामने रखती हैं। शक्ति गॉवेन की 'क्रिएटिव विजुअलाइजेशन' में बताया गया है कि जब हम अपने लक्ष्य और उस जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर अपने मन में बनाते हैं, तो वह हमारी सोच और हमारे कार्र करने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। 'द सीक्रेट' किताब ने भी जीवन में सफल होने के लिए विचारों, विश्वास और उम्मीदों के प्रभाव को लोकप्रिय बनाया। वहीं नेपोलियन हिल की 'थिंक एंड

ग्रे रीच' किताब, इच्छा, कल्पना और स्पष्ट उद्देश्य की ताकत पर जोर देती है। सबका सार यही है कि हम जिस दिशा में बार-बार अपने विचार और एनर्जी लगाते हैं, वह हमारी जिंदगी को प्रभावित करने लगती है।

अपना कॉन्सेप्ट रखें क्लीयर: एक जरूरी बात यह भी है कि सिर्फ सकारात्मक सोच काफी नहीं है। आप सुबह कह सकते हैं, 'मेरी जिंदगी बदल रही है।' लेकिन अगर अगले दस घंटे आप चिंता करते रहें, शिकायत करते रहें, खुद पर संदेह करते रहें और हर चीज के गलत होने की कल्पना करते रहें, तो उस सोच का कोई फायदा नहीं होगा। सवाल यह है कि आप वास्तव में खुद के किस रूप की प्रैक्टिस कर रहे हैं? उस व्यक्ति की, जो अब तक दुख, डर को दोहराता आ रहा है या उस इंसान की, जो आप बनना चाहते हैं?

बदलाव के प्रति रहें दृढ़: ट्रांसफॉर्मेशन कुछ हद तक एक तितली की लाइफ साइकिल जैसा होता है। एक कैटरपिलर को तितली बनने के लिए अपने पुराने रूप को छोड़ना पड़ता है। वह हमेशा कैटरपिलर बने रहकर तितली नहीं बन सकता। शायद इंसानों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी बाहरी जिंदगी



बदलने से पहले कई बार हमारे भीतर कुछ बदलना जरूरी होता है। इसलिए जब भी लगे कि मैं किसी नकारात्मक विचार के चक्र में जा रहा हूँ तो रुककर खुद से एक सवाल पूछिए, 'क्या यह विचार मुझे उस इंसान के करीब ले जा रहा है, जो मैं आगे बनना चाहता हूँ?' **एनर्जी को दें सही दिशा:** एक पुरानी बौद्ध शिक्षा हमें याद दिलाती है, 'हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे ही बनते जाते हैं।' आपका बदलाव उस समय शुरू होगा, जब आप उन विचारों, भावनाओं और आदतों को पहचानना शुरू करेंगे, जो आपको पीछे खींच रहे हैं और सचेत होकर उस इंसान की प्रैक्टिस करना शुरू करेंगे, जो आप बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी जिंदगी बदलना चाहते हैं, तो शुरुआत नए विचार और नई भावना से करनी होगी। आपका बदलाव बाहर नहीं आपके भीतर, आपके विचार में ही छिपा हुआ है। *

माई-बहन के स्नेह के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन को लेकर कई पौराणिक-ऐतिहासिक कथाएं प्रचलित हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस रिश्ते को गहन अर्थ देने वाली, कई ऐसी मार्मिक घटनाएं सामने आईं, जो अपने-आप में मिसाल हैं।

दिल को छूने वाले राखी के अनोखे किस्से



शिवम मिस्त्री को राखी बांधती अनामता अहमद



साठ साल बाद अपने भाइयों से मिली बलेश देवी

कुछ अलग
शिखर चंद जैन

रक्षाबंधन सिर्फ एक राखी या रेशमी धागा बांधने की रस्म भर नहीं, बल्कि मन से जुड़ा बंधन होता है। यह सिर्फ सगे भाई-बहन के बीच नहीं, किसी भी उस शख्स या चीज से स्नेह को दर्शाता है, जिससे भाई की अनुभूति मिलती है। ऐसी ही कुछ घटनाओं के बारे में जानिए।

अंगदान से मिला नया भाई: साल 2025 में अंगदान की एक बड़ी ही भावुक सच्ची घटना सामने आई। 9 साल की एक बच्ची रिया को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। रिया के माता-पिता ने एक बेहद साहसिक फैसला लेते हुए उसके अंग दान कर दिए। रिया का हाथ ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट के जरिए एक लड़की अनामता अहमद को लगाया गया। 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन के त्योहार पर, अनामता करीब 200 किलोमीटर का सफर तय करके रिया के घर पहुंची। वहां उसने रिया के सगे भाई शिवम मिस्त्री की कलाई पर उसी हाथ से राखी बांधी, जो कभी उसकी बहन का हुआ करता था। हुआ यह कि मुंबई के गोरगांव की रहने वाली 16 वर्षीय अनामता अहमद ने साल 2022 में बिजली के करंट की चपेट



सैनिकों के लिए राखियां बनाती स्कूली छात्राएं

में आने से अपना दाहिना हाथ खो दिया था। सितंबर 2024 में गुजरात के वलसाड की 9 वर्षीय मासूम बच्ची रिया मिस्त्री को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। वलसाड की 'डोनेट लाइफ' एनजीओ की काउंसिलिंग के बाद रिया के माता-पिता ने उसके अंग दान कर दिए। ग्रीन कोरिडोर के जरिए रिया का दाहिना हाथ मुंबई लाया गया और ग्लोबल हॉस्पिटल पर अनामता को ट्रांसप्लान्ट किया गया।

मोडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई के प्रयासों और सोशल मीडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहरदों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई

विशेष : रक्षाबंधन
28 अगस्त

सिने डेंड
अशोक जोशी

भा। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर, वृक्ष रक्षाबंधन मनाती महिलाएं लद्दाख, जैसलमेर और सिक्किम जैसे अत्यंत दुर्गम सीमावर्ती इलाकों में तैनात जवानों तक एयरलिफ्ट के माध्यम से पहुंचाने की जिम्मेवारी ली और उसे वहां तक पहुंचाया भी गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन: ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *

विशेष : रक्षाबंधन
28 अगस्त

सिने डेंड
अशोक जोशी

भा। रतीय परिवार व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अनोखा और प्यारा होता है। बचपन में जहां इसमें नोक-झोंक होती है, वहीं उम्र बढ़ने के साथ यह रिश्ता भावनात्मक सहारे में बदल जाता है। हिंदी फिल्मों ने इस रिश्ते के अलग-अलग रंगों को पर्दे पर प्रस्तुत किया है। कहीं भाई, बहन की रक्षा के लिए सब कुछ छोड़ देता है, कहीं बहन-भाई के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है और कहीं दोनों एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त बनकर सामने आते हैं। **बीते दौर की फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता:** पुरानी हिंदी फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता प्रायः परिवार की भावनात्मक धुरी के रूप में दिखाई देता था। 'छोटी बहन' (1959) और 'राखी' (1962) जैसी फिल्मों ने भाई-बहन के स्नेह, जिम्मेदारी और त्याग को प्रमुखता दी। इन फिल्मों में परिवार केवल कहानी की पृष्ठभूमि नहीं था, परिवार ही कहानी का मूल भाग था। 'बड़ी बहन' (1949), 'मंझली दीदी' (1967) जैसी फिल्मों में भी यह भाव देखने को मिलता है।

सतर और अस्सी के दशक में सामाजिक संघर्ष तथा व्यावसायिक सिनेमा के प्रभाव के साथ भाई की भूमिका अकसर 'रक्षक' के रूप में उभरकर सामने आई। बहन की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करना भाई के चरित्र की पहचान बन गया। लेकिन इसी दौर में और बाद के दशकों में आई कुछ फिल्मों ने भाई-बहन के रिश्ते के दूसरे पक्षों को भी सामने रखा।

भाई-बहन की कुछ अलग कहानी 'हरे रामा हरे कृष्णा': साल 1971 में देव आनंद और जीतन अमान अभिनीत फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' बदलते सामाजिक वातावरण, पश्चिमी प्रभाव, नशे और हिंसा संस्कृति के बीच एक भाई द्वारा अपनी बहन को वापस पाने के प्रयास की मार्मिक कहानी थी। भाई-बहन के बीच बचपन का स्नेह, परिस्थितियों के कारण बिछोह में बदल जाता है और फिर भाई अपनी बहन को उस दुनिया से निकालने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें वह फंस चुकी है।

इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाई अपनी बहन का केवल 'रक्षक' नहीं है, वह उसके अतीत, उसकी पीड़ा और उसकी पहचान को समझने की कोशिश करता है। फिल्म का लोकप्रिय गीत 'फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' तो हिंदी सिनेमा में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक बन चुका है। आज भी यह गीत राखी के अवसर पर उसी आत्मीयता से सुना जाता है।

संयुक्त परिवार में भाई-बहन का प्यार 'हम

माई-बहन के शाश्वत रिश्ते को केंद्र में रखकर या इसके इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और वास्तविकाओं पर हर दौर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। भाई-बहन के स्नेह भरे रिश्ते के विविध आयामों को दर्शाती कुछ फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर की फिल्मों में रची गई माई-बहन के रिश्ते की दास्तान



साथ-साथ हैं': नब्बे के दशक में सिनेमा ने संयुक्त परिवार और भाई-बहन के रिश्ते को अधिक घरेलू और सहज रूप में प्रस्तुत किया। 'हम साथ-साथ हैं' (1999) में भाई-बहनों के बीच प्रेम, विश्वास और त्याग कहानी का महत्वपूर्ण भाव है। यहां भाई-बहन केवल परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि एक-दूसरे के भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और आदर देते हैं।

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी उसकी कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी



को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है।

आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो': साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं।



बदलते दौर की बदलती पारिवारिक संरचना के बीच भाई-बहन के भरोसे, स्नेह और आपनेपन को सामने लाती है। **भाई के लिए बहन के संघर्ष की कहानी दिखाती 'सरबजीत':** 'सरबजीत' (2016) में भाई-बहन के रिश्ते का एक बिल्कुल अलग रूप दिखाई देता है। दलवीर कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *

आदर देते हैं।

सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी उसकी कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल': नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी

पर्ट से बाहर भी बने माई-बहन के रिश्ते

फिल्मी पर्दे पर कलाकर एक-दूसरे के भाई-बहन बने नजर आते हैं, जबकि अकसर वास्तविक जीवन में उनके बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता। इसके उलट फिल्मी दुनिया से जुड़ी कुछ हस्तियों ने पर्दे के बाहर भाई-बहन का रिश्ता कायम किया और इस आत्मीय रिश्ते को ताऊ निमाया भी। महान गायिका लता मंगेशकर के जीवन में ऐसे आत्मीय रिश्तों की विशेष जगह थी। उन्होंने कई कलाकारों के साथ उनकी पारिवारिक आत्मीयता थी। दिलीप कुमार के साथ उनका संबंध विशेष रूप से भावपूर्ण था। दिलीप कुमार उन्हें बहन मानते थे और लता जी भी उन्हें अपने भाई का स्थान देती थीं। राखी के अवसर पर दोनों का यह संबंध सार्वजनिक रूप से भी चर्चित रहा। ऐसे ही संगीतकार मदन मोहन और गायक मुकेश को भी लता जी अपना भाई मानती थीं। इन दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।

